चन्द्रशेखर 'आजाद'

(नाटक)

देवीप्रसाद धवन 'विकल'

भूमिका-लेखक

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी एम० पी०



चैतन्य प्रकाशन कानपुर

प्रकाशक
रामदुलारे बाजपेयी
अध्यक्ष चैतन्य प्रकाशन
मदनगोपाल कुलश्रेष्ठ का हाता
कृष्णनगर (दर्शनपुरवा) कानपुर

मूल्य २—५० न० पै०

जून सन् १९६१

मुद्रक:—
वाणी मुद्रण कार्यालय
रामबाग कानपुर

चार शब्द और पांच दृश्य

सौभाग्यशाली है वे जिन्हे काशीतलवाहिनी गङ्गा के दर्शन करने का अवसर मिला है पर उनका पुण्य भी कम नही, जिन्होने गगोत्री की झलक अपनी ऑखो देखी है। नरव्याघ्र आजाद के दर्शन करने का सौभाग्य हमे प्राप्त नही हुआ पर जिस माता ने नौ महीने उन्हे कोख मे रक्खा था, उसने दो बार हमारे घर पधार कर उसे पवित्र किया था।

चन्द्रशेखर आजाद विषयक नाटक के लिए चार शब्द लिखने के लिये जब बन्धुवर रामदुलारे बाजयेयी ने हमसे अनुरोध किया तो हमने यही निवेदन किया कि यह गौरव तो आजाद के किसी साथी को ही मिलना चाहिए, हम तो उसके लिए सर्वथा अनधिकारी है, क्योकि स्वाधीनता सग्राम के लिए हमसे तो कोई सेवा बन नही पडी, पर बाजपेयी जी ने उत्तर दिया 'चूँकि शहीदो के श्राद्धरूपी यज्ञ के आप एक पुरोहित है इसलिए यह जिम्मेवारी आपकी ही है। इस तर्क से निरुत्तर होकर हमे ये चार शब्द लिखने पडे है।

श्री देवीप्रसाद धवन जी ने बडी सीधी सादी भाषा मे इस नाटक को प्रस्तुत किया है और कई बार यह सहस्रो की भीड के सम्मुख सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। आजाद के कुछ पुराने साथियो ने इसकी प्रामाणिकता की प्रशसा भी की है। उत्तर भारत मे चन्द्रशेखर आजाद का नाम सशस्त्र क्रान्तिकारियो की उज्ज्वल कीर्ति का प्रतीक बन गया है और उनके विषय मे अनेक कपोल कल्पित घटनायें भी गढ ली गई है। यह सर्वथा स्वाभाविक है—प्रत्येक देश के अमर शहीदो के

विषय मे ऐसा ही हुआ करता है। फिर भी हम लोगो का कर्त्तव्य है कि सत्य रूपी सुवर्ण पर मुलम्मा चढाने की कोशिश न करे। हर्ष की बात है कि धवनजी ने घटनाओ का अलौकिक या अत्युक्तिमय वर्णन नही किया। यह अवसर इस नाटक की आलोचना करने का नही और वैसा करने का अधिकार भी मुझे नही—पर एक त्रुटि की ओर पाठको का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। अत मे शहीद अशफाकुल्ला की दो पक्तिया उद्धृत की गई है—

शहीदो की चिताओ पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशां होगा॥

जिन्होने मजार को चिता बना दिया है, उन्होने दरअसल जबरदस्त भूल की है, क्योकि मेले मजार पर ही जुड सकते है चिता पर नही

निस्सन्देह शहीद अशफाकुल्ला भी एक नाटक के उपयुक्त पात्र है।

प्रकाशक की आज्ञानुसार मैने ये चार शब्द लिख दिए और अब मै अपनी ओर से पाँच दृश्य पाठको को दिखलाना चाहता हू

दृश्य नं० १

बैठा बैठा डाक की प्रतीक्षा कर रहा था कि इतन मे हमारा चपरासी टीकमगढ मे डाक लाया। उसमे एक पत्र था सीतामऊ के राजकुमार डाक्टर रघुवीरसिहजी का। मैने उन्हे लिखा था कि पता तो लगाइए, आजाद की माताजी जीवित है या नही। उन्होने मुझे लिख भेजा कि माताजी अभी जीवित है और भावरा, अलीराजपुर मे रहती है।

आजाद की शहादत के बाद सत्रह वर्ष तक माता जी घोर आर्थिक सकट सहती रही।

पाँच वर्ष तक तो आजाद के पिता जी जीवित रहे। तत्पश्चात् वे भी चले गये। माता जी दिन मे एक बार कोदो की खिचडी बना

लेती थी और उसे ही दोनो बार खा लेती थी । यह सुन कर हृदय को बडी वेदना हुई और हमने एक लेख लिखा "और हम भूल गए !"

दृश्य नं० २

आजाद की माता जी को हम साँतार नदी के तट पर स्थित हनुमानजी के उस मन्दिर पर ले गये, जहा आजाद फरार होने की अवस्था मे तपस्या किया करते थे । जब आजाद के पुराने साथी मास्टर रुद्रनारायण जी ने माता जी का वह कोठरी दिखलाई, जिसमे आजाद रहते थे तो माता जी ने उसकी जमीन पर सर पटक पटक कर रोना शुरू किया । वह हृदय-विदारक दृश्य हममे से किसी से न देखा गया और सब दूर जा कर खडे हो गये और अपने आँसुओ को रोक न सके ।

उन क्षणो का वृत्तान्त मैने एक चिट्ठी मे बहन सत्यवती जी मल्लिक को लिख भेजा । उन्होने वह पत्र श्रीमान प० जवाहरलाल को भेज दिया और पण्डित जी ने तुरन्त ही माता जी के लिए ढाई सौ रुपये भेज दिये । जनता ने भी काफी आर्थिक सहायता दी और उत्तर-प्रदेश तथा मध्य भारत की सरकारो ने उन्हे २५—२५ रुपये महीने की दो पेन्शन कर दी, जिन्हे वे केवल तीन वर्ष ही भोग पायी ।

दृश्य नं० ३

माताजी दो बार हमारे निवास स्थान कुण्डेश्वर पर पधारी । मानो घर बैठे तीर्थ ही हमे पवित्र करने के लिए आ गया हो । प्रथम बार वे चार दिन रही और दूसरी बार दस दिन ।

माताजी अक्सर हम लोगो को अपनी बाते सुनाती थी और आजाद के किस्से सुनाते-सुनाते फूट-फूट कर रोने लगती थी ।

एक दिन माता जी ने कहा —

'चन्द्रशेखर छुटपन मे कुछ कमजोर था । घर मे गाय भैस तो थी,

लेकिन वे दूध बहुत थोडा देती थी। दूध जमाने के बाद जो थोडा सा दूध बचता, उसमें पानी और बहुत सा साबूदाना मिला कर खीर बना देती और उसी को दिन मे कई बार चन्दू को देती। कुछ दिनो बाद वह काफी मोटा हो गया। कही औरतो की नजर न लग जाय इस डर से मै उसके काजल का डिठौना लगा देती। मुझे क्या मालूम था कि जिसे मैने इतने प्यार से पाला वह मुझे इस तरह छोड कर चला जायगा।' इतना कह कर माता जी फूट-फूट कर रोने लगी। फिर बोली - 'चन्द्रशेखर बर्फी का बहुत शौकीन था। मै उसे तिवारी जी की चोरी से बर्फी के लिए पैसे दे देती। उसके लिए मुझे चोरी भी करनी पडी।' यह कह कर माता जी फिर रोने लगी।

दृश्य नं० ४

हम लोग माताजी से आजाद के बारे मे कम ही पूछते थे, क्योकि आजाद का नाम सुनते ही वे दुखी हो जाती थी। लेकिन उन्हे आजाद के मरने की खबर कब लगी होगी और वे उस भयकर बज्रपात के समाचार को कैसे सुन सकी होगी यह जानने की इच्छा हमारे मन मे दबी हुई थी। एक दिन किसी ने पूछ लिया, 'माता जी, आपको आजाद के न रहने को खबर कब और कैसे लगी ? सुनते ही माता जी का गला भर आया। वे कहने लगी, एक दिन मैं खाना खाकर लेटी ही थी कि पडोस की एक स्त्री आई। वह कुछ उदास सी थी। मैने पूछा, 'आज तुम ऐसी शक्ल क्यो बनाये हो ? किसी से लडाई हो गई हैं ?' पहले तो वह बोली नही, बाद मे बहुत जिद करने पर उसने रोते हुए कहा, 'आजाद भइया नही रहे।' मेरी आँखो के आगे अंधेरा छा गया। मैने माथा पटक पटक कर रोना शुरू कर दिया, जिससे एक आख मे गलाव आ गया। बाद मे उस आख को

निकलवा देना पडा । 'चन्द्रशेखर को एक आख तो दे दी, लेकिन प्राण नही दिये गये ।' इतना कह कर माता जी रोने लगी । हम लोगो की आखो मे आसू आ गये ।

दृश्य नं० ५

माता जी के पाच सन्तान हुई थी उनमे चार पहले ही स्वर्गवासी हो चुकी थी । बडा लडका तो पोस्टमैन बन चुका था और उसका विवाह करने के लिऐ वे उन्नाव के निकट अपने ग्राम बदरका को आने ही वाली थी कि वह चल बसा । आजाद की शहादत के बाद माता जी की कोख विलकुल सूनी हो गई । भला हो भाई भगवानदास जी माहोर तथा साथी सदाशिव जी का जिन्होने माता जी के अन्तिम दिनो मे उनकी भरपूर सेवा की । तीर्थ यात्रा करने की उनकी जो इच्छा थी वह भी पूरी हो गई । माता जी बराबर इस भ्रम मे रहीं कि आजाद कही छिप गया है और वह लौट आवेगा । पर जिस दिन वे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क मे पधारी और वह स्थान उन्हे दिखलाया गया, जहा आजाद का बलिदान हुआ था, तब उनको विश्वास हो गया कि उनका बेटा आजाद अब नही लौटेगा और तब वे खूब फूट फूट कर रोई ।

माता जी की अन्तिम इच्छा यही थी कि आजाद के जन्म स्थान पर इनका कोई स्मारक बन जाय जिससे वहा की आस पास की साधनहीन जनता की कुछ सेवा हो सके ।

आजाद की शहादत को ३० वर्ष हो चुके । मध्य प्रदेश बडा धन धान्य समृद्ध है । आयोजनाओ पर वहा करोडो रुपये खर्च हो रहे है ।

वहा की भूमि रत्न–गर्भा है-----हीरा जवाहरा की वहा खाने हे---- पर जिस झोपडी मे नररत्न चन्द्रशेखर का जन्म हुआ वह जीर्ण अवस्था मे ज्यो की त्यो खडी है।

यही है हमारा स्वाधीनता प्रेम और यही है हमारी कृतज्ञता।

९९ नार्थ ऐवेन्यू
नई दिल्ली
७-६-६१

बनारसीदास चतुर्वेदी

नाटक के विषय में

सन् १९३०–३१ के विप्लवकारी दिनो मे जब मैं फैजाबाद जेल मे था उस समय सहसा एक दिन पं चन्द्रशेखर आजाद के अलफ्रेड पार्क मे शहीद होने का हृदय विदारक समाचार मिला। विस्तृत समाचार उस समय मिल सका जब 'तिकडम' से दैनिक 'लीडर' की एक प्रति जेल के अन्दर आ गई। उसमे आजाद–नाटबावर युद्ध का चित्र भी था। हृदय रो पढ़ा। न जाने कितनी स्मृतियाँ हरी हो उठी।

कानपुर मे ही बहुत बार अमर शहीद आजाद से मिलने–जुलने तथा साथ बैठने का अवसर प्राप्त हुआ था। पं० चन्द्रशेखर आजाद को वे ही समझ सकते है जिन्हे कभी दो घडी के लिए भी उनके दर्शन करने का अवसर मिला हो। कानपुर मे प्राय वे भाई प्यारेलाल अग्रवाल तथा श्री रामचन्द्र मुसद्दी के घर रहा करते थे। जब आजाद जीवित थे तभी कोई उनके जीवन का मूल्य न आक सका और आज किसमे साहस है उस नर–केसरी के मूल्याकन का। यह पुस्तक स्व० प्यारेलाल अग्रवाल तथा भाई रामचन्द्र मुसद्दी को ही समर्पित करता हू।

प्रस्तुत नाटक मे कोई भी घटना कल्पित नही है। किसी घटना को अणु मात्र भी बढा कर नही लिखा गया है। इसका प्रमाण स्वयमय मैं हूँ जिसने उन दिनो लेखनी त्याग कर उक्त आन्दोलनो मे सक्रि भाग लिया।

मै श्रद्धेय प० बनारसी दास जो चतुर्वेदी का हृदय से आभारी हूँ जिन्होने अपना अमूल्य समय मेरी इस कृति को दे कर इसकी सुन्दरता मे चार चाद लगा दिए। उक्त भूमिका से पुस्तक गौरवन्वित हो गई है।

११–६–१९६१ ई०

—देवीप्रसाद धवन 'विकल'

पात्र–पात्री

चन्द्रशेखर आजाद	सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी
रामप्रसाद बिस्मिल	काकोरी के शहीद
राजेन्द्र लाहिड़ी	,, ,,
रोशन लाल	,, ,,
अशफाकुल्ला	,, ,,
भगत सिह	सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी
राजगुरु	भगतसिह के सहायक
सुखदेव	भगतसिह के सहायक
पं० जवाहरलाल नेहरू	देश के कर्णधार
नाट वावर	सुपरिटेंडेट पुलिस
सेठ जी	आजाद के हितैषी
सेठानी जी	आजाद की आश्रयदात्री
मदनमोहन मालवीय	देश के सुप्रसिद्ध नेता
मोतीलाल नेहरू	देश के सुप्रसिद्ध नेता

कांग्रेस स्वयं सेवक, पुलिस कांस्टेबिल, एसेम्बली के सदस्य आदि ।

प्रथम अंक　　　　　　　　　प्रथम दृश्य

[नेपथ्य से 'भारतमाता की जय हो' 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' 'स्वतन्त्र भारत जिन्दाबाद' के नारे लगाता हुआ स्वतन्त्रता दिवस का जलूस निकल रहा है ।]

एक नेता　　आज स्वतन्त्रता दिवस है, आज सदियो की गुलामी के बाद हम स्वतन्त्र हुये है, यह आजादी हमको बहुत मँहगी पडी है । देश की बलिवेदी पर जिन वीरो ने अपने प्राणो की भेट चढाई है आज सर्व प्रथम आपको उन्हे श्रद्धाजलि भेट करना है ।

एक व्यक्ति　: महात्मा गान्धी !

सब　: जिन्दाबाद

दूसरा व्यक्ति　: पण्डित नेहरू!

सब　: जिन्दावाद

तीसरा व्यक्ति　सरदार पटेल !

सब　: जिन्दाबाद

चौथा व्यक्ति : मोतीलाल नेहरू !

सब : जिन्दाबाद

नेता : भाइयो, इस अवसर पर आप उन लोगो को न भूल जॉय जिन्होने अपने प्राणो की बाजी लगाकर इस स्वतन्त्रता के रथ को खीचा है। अपने रक्त से इस देश की बलिवेदी को सीचा है। बोलिये, एक बार प्रेम तथा श्रद्धा के साथ बोलिये 'सरदार भगत सिह—

सब : जिन्दाबाद

नेता जी : अमर शहीद जतीनदास !

सब जिन्दाबाद

नेता जी . झासी की रानी !

सब ' जिन्दाबाद

नेता जी चन्द्रशेखर आजाद !

सब जिन्दाबाद

['चन्द्रशेखर आजाद 'जिन्दाबाद' के नारे लगाता हुआ जलूस आगे बढ जाता है।]

[फलाट का फटना]

[स्वतन्त्रता–दिवस की सभा हो रही हैं। एक नेता जी भाषण दे रहे है।]

नेता जी चन्द्रशेखर आजाद। मैं कहता हूँ कि चन्द्रशेखर आजाद का नाम भारत के

इतिहास मे, राजनीति के इतिहास में तथा आजादी की लडाई के इतिहास मे सदा अमर रहेगा। इतने बड़े नेता— इतने बड़े व्यक्तित्व तथा उनके महान कार्यों से जिस दिन देश भली भाँति परिचित होजायगा उस दिन प्रेम, प्रशसा तथा श्रद्धा के आँसुओ से आप उनकी सही पूजा कर सकेंगे। चन्द्रशेखर आजाद—

सभी : जिन्दाबाद

नेता जी : हाँ, तो मैं कहने जा रहा था कि जिस समय देश की स्वतन्त्रता की लडाई का श्रीगणेश जलियानवाले बाग के हत्या-काण्ड से हुआ था उस समय चन्द्रशेखर आजाद एक उठते हुए नवयुवक थे— चन्द्रशेखर आजाद ने उस काण्ड को निकट से देखा, समझा और अपनी भावनाओ को प्रगति दी—

[फलाट का फटना]

अङ्क प्रथम द्वितीय दृश्य

[अमृतसर की एक गली । खद्दर पहिने हुये एक नवयुवक का प्रवेश]

नवयुवक : ओह राजभक्ति का ऐसा भीषण पुरस्कार। हमारी आशाओ का खून, स्वराज्य के बदले रौलट कानून ठीक है, हम गुलाम है, ससार मे हमारी कोई हस्ती नही, हमारी कोई सुनवाई नही ।

हम भेंड व बकरी से भी गुजरे हुए बेकाम
संसार में कुछ मूल्य न उसका जो है गुलाम

[घबडाये हुये एक और नवयुवक का प्रवेश]

दूसरा नवयुवक . गजब हो रहा है चन्दू भइया, जलियान वाले बाग मे जिस सार्वजनिक सभा की घोषणा हुई थी उसे सरकार ने दफा १४४ लगा दिया है---अब क्या होगा— अब क्या होगा ।

पहिला नवयुवक : तो फिर—तो फिर !

दूसरा जनता जोश मे है । वह वहाँ पर सभा करने के लिये तुली हुई है । आज न जाने

क्या होने वाला है भइया—हम क्या करे—हमको क्या करना चाहिये ।

पहिला नवयुवक : क्या करना चाहिए ? हमको अब ईट का जवाब पत्थर से देना पडेगा । इस ब्रिटिश सरकार से डट कर लोहा लेना पडेगा अब सहन नही हो सकता, अब सहन नही हो सकता ।

अब न बाकी बलबलें हैं और न अरमानों की भीड़
एक मर मिटने की हसरत अब दिले बिसमिल में है

दूसरा नवयुवक : किन्तु यदि सभा मे गडबडी हुई ।

पहिला नवयुवक यदि देश की आजादी चाहते हो रमेश तो लाठियो और डण्डो के सामने अपने सीने खोल देने पडेगे । माताओ को अपने बेटो की लाशो पर आँसू बहाने के लिये तैयार होना पडेगा, पत्नियो को वैधव्य का श्रृङ्गार धारण करने की आशा लेकर आगे बढना पड़ेगा और नवयुवको को सिर मे कफन लपेट कर बलिवेदी पर उतरना पड़ेगा । किसी देश को आजादी मॉगने से नही मिला करती रमेश । उसके लिये भारी से भारी मूल्य चुकाना पड़ता है।

दूसरा नवयुवक : हमको वह मूल्य चुकाना ही पड़ेगा चन्दू

भइया। अच्छा तो फिर मै सभा की ओर चला।

पहिला नवयुवक : हाँ जाना ही चाहिये। इस प्रकार कायरों की भॉति हम कब तक अत्याचार सहन करेगे। आज आजादी की लड़ाई हमको पुकार रही है हमको आगे बढ़कर अपनी कुरबानी देनी चाहिये। तुम चलो रमेश। मै भी आने की चेष्टा करूँगा।

[दूसरा नवयुवक चला जाता है]

पहिला नवयुवक . देश की आजादी ! किन्तु अब सहन नही हो सकता। इन विदेशियो ने हमको मोम का समझ रक्खा है। हम उनको बतला देगे कि भारतवासी भी अपने मुल्क पर मरना जानते है, अपनी आजादी लेना जानते है। किन्तु हम निशस्त्र है—हमारे लिए अहिसा की लड़ाई सर्वोत्तम मार्ग है। हम—हम—किन्तु अब सभा का समय हो रहा है। आज कुछ होकर ही रहेगा। हम भेढ और बकरी नही है। हम भी वतन पर मरना जानते है। बन्देमातरम्।

[चला जाता है]

प्रथम अङ्क　　　　　तृतीय दृश्य

[जलियान वाले बाग का दृश्य । सभा हो रही है]

नेता : हमने यूरोप की युद्ध भूमि मे प्राण दिए, हमने गली गली भीख माँग कर युद्ध के लिए चन्दा एकत्र किया, हमने तन, मन, धन से योग देकर अपनी राज भक्ति का प्रगाढ परिचय ससार को दिया, किन्तु इन अंग्रेजो से, इस विदेशी सरकार से इस एहसानफरामोश हूकूमत से जानते हो हमको क्या मिला हमको मिला है रौलट कानून हमको अब अपनी फरियाद भी सुनाने की आजादी नही रही, हमको अब अपने अधिकारो की भी अपने प्रभुओ को याद दिलाने की आजादी नही रही । भाइयो, इस गोरी सरकार ने, इस विदेशी शासन ने हमारी रही सही स्वतन्त्रता भी हमसे छीन ली है । लेकिन हम अब सचेत हो गए, सोती हुई निन्द्रा से जाग गये है, अब हम मुँह बन्द करके

नही रह सकते स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हम अब उसको लेकर ही रहेगे हम जानते है भाइयो कि हम पर दमन होगा हम जेलो मे ठूँस दिये जायेगे किन्तु मै कहता हूँ कि यह सारा देश क्या हमारे लिए एक बड़ा भारी जेलखाना नही है। अब हम अपनी जुबानो पर ताला नही लगा सकते, हम प्राणो को हाथ मे लेकर आगे बढेगे, हम जेलो को भर देगे। लाठियाँ और डण्डो को अपने सिरो पर वीरता के साथ झेलेगे—जवानो आगे बढो और इस नौकरशाही की गोलियो के सामने अपना सीना तान दो—

[सहसा गोलियो को आवाज सुनाई पडने लगती है]

नेता : बैठ जाओ, जवानो, आज देश के प्रति कुरबानी की हम पहिली किस्त चुकायेगे। भागो नही—भागो नही—

[धुँआधार गोलियाँ चलने लगती है। लाशे गिरने लगती है]

(जेनरेल डायर का प्रवेश)

जेनरेल डायर : भून दो, खबरदार कोई भागने न पाए। मारो, मारो, बागी-बागी इन बागियो को--इन काले कुत्तो को मार कर बिछा दो। इसे मारो--उसे मारो—सब तरफ से घेर लो, हा हा हा हा-शैतान--हा हा हा--

[लासो से भूमि पटने लगती है]

जेनरेल डायर · आ हा हा हा। होम रूल माँगता है। काला आदमी कही का। हमने जर्मन को हराया, हमारा मुकाबिला दुनियाँ मे कौन कर सकता है।

[दो नवयुवक आते है]

एक नवयुवक : अरे जरा तो इन्सानियत से काम लो। इस देश के रहने वाले भी तो इन्सान ही है——

जेनरेल डायर पकड लो इस बदमाश को। गोली मार दो——

[सिपाही युवक को पकड लेते है]

दूसरा युवक : इस नौकरशाही से डरना नही रमेश। हम सर पर कफन लपेट कर निकले है। स्वराज्य हमारा अधिकार है। हम इस प्रकार की धमकियो तथा अत्याचारो से डरे गे नही——

[जेनरेल डायर उसको गोली मार देते है]

जेनरेल डायर : हा हा हा हा। ले जाओ इसको जेल ले जाओ। इसका कोर्ट मार्शल होगा ले जाओ।

[सिपाही उस युवक को ले जाते हैं]

जेनरेल डायर : होम रूल लेगा । क्या समझता है ?

सिपाही : यह हुजूर यह शहर की दीवारों पर मीटिंग के नोटिस चिपका रहा था ।

[डायर उसके ठोकर मारता है]

डायर : डैम, बागी है । इसके कोड़े लगाओ ।

[सिपाही उसके कोड़े लगाता है]

नवयुवक : आह, भारतमाता की जय । दुष्टो इस दमन का परिणाम एक दिन रङ्ग लायेगा आह,—पानी—

[सिपाही उसके फिर कोड़े लगाता है । नवयुवक बेहोश होकर गिर जाता है ।]

डायर : चलो, शहर मे जो भी हिन्दुस्तानी दिखलाई दे बिना पूछे गोली मार दो । होम रूल लेगा ? डैम–बदमाश कही का ।

[डायर के साथ सिपाही चले जाते है । घायलो की कराह के साथ परदा गिरता है]

प्रथम अंक चतुर्थ दृश्य

[बनारस जेल का दृश्य । अदालत लगी हुई है]

मजिष्ट्रेट मुल्जिमो को हाजिर करो ।

[चपरासी जाता है और थोडी ही देर मे एक नवयुवक को लाता है]

मजिष्ट्रेट : तुम्हारा क्या नाम है ?

नवयुवक : आजाद ।

मजिष्ट्रेट तुम्हारे बाप का नाम ?

नवयुवक स्वतन्त्र ।

मजिष्ट्रेट यह कैसा नाम ? हम तुम्हारे बाप का नाम पूछते है ।

नवयुवक स्वतन्त्र ।

मजिष्ट्रेट : पेशा ?

नवयुवक : देश भक्ति ।

मजिष्ट्रेट : स्थान ?

नवयुवक : हिन्दुस्तान

[मजिष्ट्रेट क्रोध से मेज पर हाथ पटकता है]

मजिष्ट्रेट वेल तुमको मालूम होना चाहिए कि यह अदालत है।

नवयुवक . मै इस अदालत को अदालत नही मानता यह न्याय का परिहास है। विदेशियो को हम पर शासन करने का कोई अधिकार नही। हम आपकी अदालत को अदालत नही मानते।

मजिष्ट्रेट बदमाश। हम तुमको फाँसी दे सकता है जानता है।

नवयुवक हम सब आपकी धमकियो से नही डर सकते। मै पूछता हूँ कि आप हम मे से कितनो को फाँसी के तख्तो पर लटका कर अपना शासन कायम रख सकेगे। आज जो आग देश के कोने कोने मे भड़क उठी है उसको बुझाना अब आपकी शक्ति से बाहर की बात हो गयी है। भारतीय अब न तो आपके शासन को ही सहन कर सकते है और न इस अदालत को ही हम न्यायपूर्ण अदालत मान सकते है।

मजिष्ट्रेट · ओह हम इस मुल्क को तोपो से उडा सकते है।

[नवयुवक ठहाका लगाता है]

नवयुवक : अब देश-भक्ति को धधकती आग तोपों से न बुझाई जा सकेगी। हम आपकी तोपो के सामने अपने असंख्य सीनो को अड़ा कर उन्हे बेकार सिद्ध कर देंगे। हमारी लडाई न्याय की लड़ाई है।

हम सत्य अहिंसा से इस जग को हिला देंगे,
अब तक जो असम्भव था सम्भव बना देंगे।
भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना,
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना।

मजिस्ट्रेट ओह यह बकवास बन्द कर। सिपाहियो इसे जेल मे ले जाकर कोडे लगाओ ले जाओ।

नवयुवक यही बकवास एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य की जडे हिला देगी, विदेशी शासन के कफन मे कीले ठोक देगी। अच्छा बन्देमातरम्

[सिपाही नवयुवक को ले जाते है]

मजिस्ट्रेट · इस बदमाश ने मेरा दिमाग खराब कर दिया है। अच्छा अब दूसरे मुल्जिम को पेश करो।

[सिपाही एक वृद्ध को लाते हैं]

मजिष्ट्रेट तुम्हारा नाम ?

वृद्ध : गङ्गाराम

मजिष्ट्रेट तुम बागी है । हम तुमको सजा देता है ।

वृद्ध : हुजूर मै बागी नही हूँ । सरकार का खैरख्वाह हूँ । ये सिपाही हमको घर से पकड लाये हैं ।

मजिष्ट्रेट . ओह तुम बागी है । सारा हिन्दुस्तान बागी है । हम तुमको दो साल की सजा देता है । ले जाओ ।

वृद्ध : हुजूर मै तो—

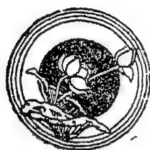
मजिष्ट्रेट : नही सुनना चाहता । दो साल का सजा ले जाओ ।

सिपाही : यह मुलजिम नही है हुजूर । आपकी मोटर के ड्राइवर का बाप है । वह गलती से पजाब मे पकड लिया गया हैं । यह उसकी फरियाद लेकर आया है ।

मजिष्ट्रेट : ओह हम आज कुछ नहीं सुनना मांगता । इसका लड़का पंजाब में क्यों पकड़ा गया । हम इसको सजा देगा । ले जाओ ।

[सिपाही वृद्ध को ले जाते हैं]

मजिस्ट्रेट : वागी, ये वागी हमारी ताकत को नहीं जानते। हमने जर्मन को हराया है। हमारी ताकत, हमारी पुलिस, हमारी तोपे—हा हा हा अब हम जा रहा है। जितने मुलजिम बाकी रह गये है। सब को दो दो साल की सजा सुनाई जाती है।



[अमृतसर की एक सडक । फौज का पहिरा लगा हुआ है । एक व्यक्ति हाथ मे दवा की शीशी लिए हुये आता है । सिपाही बन्दूक तानता है]

सिपाही : खबरदार वही रुक जाओ । इधर आने जाने की इजाजत नही है ।

व्यक्ति : अरे भाई मेरा बेटा मर रहा है । मैं उसके लिये दवा लेकर जा रहा हूँ । उसकी हालत खराब है ।

सिपाही · नही, सरकारी हुक्म है । कोई हिन्दुस्तानी इधर से नही जा सकता ।

व्यक्ति लेकिन मेरा बेटा मर रहा है ।

सिपाही मरता है तो मर जाने दो । उसके मर जाने से ब्रिटिश हुकूमत मे कोई कमी न आ जायगी ।

व्यक्ति दया करो, रहम करो, वह मेरा इकलौता बेटा है । रात भर बिना दवा के तड़पता रहा है । ईश्वर के नाम पर—

सिपाही . चुप रह ईश्वर के बच्चे। आगे बढ़ा तो—

व्यक्ति ओह, ब्रिटिश राज्य मे इतना अन्धेर, बेटा मर रहा है। बाप को दवा भी ले जाने की आज्ञा नही। धिक्कार है इस गुलामी पर—

इस गुलामी से तो मरना लाख बार कबूल है,
जुल्म और अन्याय सहना अब सरासर भूल है।

सिपाही : पकड़ लो इसे यह अंग्रेजों के खिलाफ बात करता है।

दूसरा सिपाही : पकड़ने का नही आज तो गोली मार देने का हुक्म है।

व्यक्ति : मार दो, गोली मार दो, इस दमन, इस अत्याचार तथा इस जुल्म से तो मर जाना ही अच्छा है। दमन से ही हमारी आखे खुल रही है। जिस ब्रिटिश हुकूमत के लिए हमने अपना तन, मन, धन सभी कुरबान किया उसका इस देश के वासियो के साथ ऐसा घृणित व्यवहार ?

सुर्खरू होता है इन्सा सख्तियां सहने के बाद
रङ्ग लाती है हिना पत्थर से पिस जाने के बाद
गुल चढ़ायेंगे लहद पर जिनसे यह उम्मीद थी,
वे ही पत्थर रख गए सीने पे मर जाने के बाद

सिपाही : चुप रह गुलाम

[गोली मार देता है [

व्यक्ति : आह, बेटा बेटा ।

[एक सिपाही लात मारता है]

सिपाही · मर कमीने

व्यक्ति : आह, मै मर रहा हूँ मगर मगर—

करुणाकर भगवान तुम सुनना मेरी हाय ,
इस अंग्रेजी सरकार का सर्वनाश हो जाय ।

[मर जाता है सिपाही ठहाका लगाते है]

एक सिपाही रामसिह—इस लाश को दरिया मे जाकर फेक दो ।

[एक सिपाही लाश को घसीट कर ले जाता है [

[सूटेड बूटेड एक बाबू का प्रवेश]

सिपाही ठहरो उधर जाने का हुक्म नही है :

बाबू मै सरकारी नौकर हूँ । अपनी ड्यूटी पर जा रहा हूँ ।

सिपाही तू कोई भी क्यो न हो उधर नही जा सकता ।

बाबू मुँह सभाँल कर बात करो जी—

[सिपाही—उसके मुह पर थप्पड लगाता है]

सिपाही ले परसाद। अब तेरा दिमाग ठीक हो गया। मैने कह दिया कि इधर से हिन्दुस्तानियो को जाने की इजाजत नही है।

बाबू मगर मुझे सरकारी दफ्तर जाना है।

सिपाही . अगर जाना है तो पेट के बल रेंग कर जाना पडेगा।

बाबू : कैसे ?

[सिपाही उसे धक्का मार कर गिरा देता है और पेट के बल कर देता है]

सिपाही ऐसे। इस तरह पेट के बल रेग कर चले जाओ पट्ठे।

[बाबू पेट के बल रेंग कर जाता है। सिपाही हँसते है। बाबू सडक के पार जाकर खड़ा होकर कुछ सोचता है]

बाबू : इतना अपमान। हमारा बश कितना राज—भक्त प्रसिद्ध है उस पर भी यह हमी पर अत्याचार। धिक्कार है हम लोगो को—सचमुच विदेशी सरकार कभी अपनी नही हो सकती। यह सूट बूट, धिक्कार है इस वेश भूषा की। अब तो आखे खुल

गयी है। आज निर्वाण है—अब देश के लिये ही यह शेष जीवन व्यतीत होगा। सरकारी नौकरी को आज ही से नमस्कार।

वतन के होगें हम और आज से अपना वतन होगा,
मरेंगे तो बदन पर अब स्वदेशी ही कफन होगा।



प्रथम अंक षष्ठी दृश्य

[बनारस जेल। आजाद टिक्टी पर बँधे हुए है तथा एक व्यक्ति कोड़े लगाने के लिए प्रस्तुत खड़ा है]

[एक पुलिस अधिकारी का प्रवेश]

पुलिस अधिकारी : चन्द्रशेखर, मजिस्ट्रेट ने खुश होकर तुम को छोड़ देने का हुक्म दिया है। शर्त यह है कि तुमको लिखकर माफीनामा पेश करना पड़ेगा।

[चन्द्रशेखर हँसता है]

चन्द्रशेखर : आप उनसे जाकर कह दीजिए कि मुझे उनकी किसी भी तरह की कोई शर्त मजूर नही है।

पुलिस अधिकारी खूब अच्छी तरह से सोच लो चन्द्रशेखर। क्यो अपनी जिन्दगी बरबाद करोगे। कोडों की मार से शायद जानकारी तुम नही रखते। नादानी मत करो।

चन्द्रशेखर : आप अपना काम करिए, मैं अपना काम कर रहा हूँ। आप अपने इस सड़े हुये

उपदेश को अपने ही तक रखिये। आप भी हिंदुस्तानी है। क्या आपको यह शोभा देता है कि आप अपने ही मुल्क के साथ गद्दारी करे ।

[पुलिस अधिकारी क्रोध मे भरता है]

पुलिस अधिकारी जमादार, अपना काम शुरू करो। अभी दो ही कोड़ो मे इसकी अक्ल रास्ते पर आ जायगी।

[जमादार कोडा लगाता है]

चन्द्रशेखर वन्देमातरम्

[जमादार फिर कोडा लगाता है]

चन्द्रशेखर बन्देमातरम्

[शरीर से रक्त बहने लगता हे। फिर भी जमादार कोडा लगाता है]

चन्द्रशेखर बन्देमातरम्

जमादार कोडे लगाता है और हर बार चन्द्रशेखर 'बन्देमातरम्' कहता है। धीरे धीरे वह बेहोश हो जाता है। फिर भी कोडो की क्रिया पूरी की जाती हे]

पुलिस अधिकारी · अब इसको जेल के अस्पताल मे पहुँचा दो ।

[जमादार उसे टिक्टी से खोल कर स्ट्रेचर पर रखता है और जेल के अस्पताल ले जाता है]

प्रथम अङ्क सातवां दृश्य

[जन पथ पर जनता का जलूस]

(गाना)

जयति जयति भारतवर्ष देश
क्यों माता तेरा मन मलीन क्यों माता तेरा रूखा वेष
यद्यपि तेरा दिव्य कान्ति मलिन हो गया है आज,
चहूँ दिश घनघोर घटा दु.ख की छाई है आज।

हम मिटायेगे मा तेरी कालिमा है मनुष्य नहि तो भेष,
साधन मम धन्य जननि धन्य भारतवर्ष देश॥

जयति जयति जन्म भूमि धन्य भारतवर्ष देश,
क्यों माता तेरा मुख मलीन क्यों माता तेरा रूखा वेष।

सभी : भारतमाता की जय हो

सभी : महात्मा गाधी की जय हो

एक नेता : भाइयो हम देश को आजादी के लिये लड रहे है, हमारी लडाई अहिसात्मक हैं, हम पर गोलियो और लाठियो की वर्षा हो किन्तु हम शान्त रहेगे। अहिसा के पथ पर ही चलकर हमारी विजय होगी।

हम स्वराज्य प्राप्त करेंगे। यदि पुलिस तुम्हारे ऊपर लाठी चलाये तो तुमको अपने ही स्थान पर खड़े होकर शान्ति-पूर्वक उस प्रहार को सहन करना है। लाश गिर जाय किन्तु पीछे कदम हटाना कायरता है। बोलो, एक स्वर से बोलो बन्देमातरम।

[दलबल सहित पुलिस कप्तान का प्रवेश]

पुलिस कप्तान : जलूस भग करो। यह जलूस गैर कानूनी है।

नेता . यह हमारा देश है। हमको जन्म सिद्ध अधिकार है कि हम स्वतन्त्रता के साथ विचरण कर सके। आप हमको रोकने वाले कौन होते है।

पुलिस कप्तान : जलूस भग करो। मैं कहता हूँ कि जलूस भंग करो। मैं तुम्हे दो मिनट का समय देता हूँ।

नेता · जलूस भंग न होगा।

पुलिस हम लाठी चार्ज करेंगे।

नेता आप कर सकते है।

[कप्तान दो मिनट तक खड़ा रहता है]

कप्तान : सिपाहियो, जलूस भग करो।

[पुलिस लाठी चलाती है। नौजवान डटे रहते है। बहुत से घायल होकर गिर जाते हैं]

कप्तान — इस बदमाश नेता को गिरफ्तार करो।

[पुलिस नेता के हाथो मे हथकडिया डाल देती है]

नेता — मनुष्यता के नाते इन घायलो को तो अस्पताल मे पहुचाने का प्रबन्ध कर दीजिये।

कप्तान — चुप बदमाश

[नेता के गाल पर तमाचा लगाता है]

नेता — क्या यही है तुम्हारी सभ्यता ? संसार में अपनी सभ्यता का डका पीटने वाली गोरी जाति के ये काले कारनामे ?

[कप्तान उसके हटर लगाता हैं]

नेता — आपके अत्याचारो से अब हम नहीं डरते। किन्तु याद रखना कि यह अत्याचार एक दिन रग लायेगा।

[पुलिस कप्तान नेता को हटर लगाने के लिये फिर उधृत होता है किन्तु सहसा एक नवयुवक आकर कप्तान के गोली मार देता है]

नवयुवक — खबरदार नीच

सिपाही — पकडो, पकड़ो—

नवयुवक — खबरदार जो किसी ने आगे बढने की चेष्टा की। बन्देमातरम्।

[जल्दी से एक ओर चला जाता है]

प्रथम अंक आठवां दृश्य

[बनारस जेल, चन्द्रशेखर आजाद अपने वार्ड मे टहल रहा है]

चन्द्रशेखर आजाद · अहिसा ? हिश—इतना बडा देश—अहिसा के बल पर आजाद नही किया जा सकता मै बदला लूगा । निहत्थे नर नारियो पर लाठियो का प्रहार—ओह मै सहन नही कर सकता । मै नही सहन कर सकता । मै बार बार अपने मन को एकाग्र करता हूँ किन्तु न जाने क्यो मेरा मन अहिसा के सिद्धान्त के आगे अपनी उमंगो को कुरबान नही करना चाहता । किन्तु क्या हिसा से इतनी शक्तिशाली सरकार को झुकाया जा सकेगा बिना शस्त्र के तोपो और गोलियो वाली सत्ता को होश पर लाया जा सकेगा नही नही, यह सभव नही—यह असभव है । तब तब फिर—तब तो महात्मा गाधी का अहिसा ही वाला सिद्धान्त हमारी सफलता का एक मात्र साधन हो सकता है । किन्तु हमारे

भाई मौत के घाट उतारे जायेगे और मै खडा खडा कायरो की भाति देखता रहूँगा हमारे नवजवानो के सिर तोड़े जायेगे और हम उसका प्रतिकार भी न ले सकेगे। हमारे सामने ही हमारी मा बहिनो की इज्जत लूटी जायगी और हम उस अत्याचारी को रोक भी न सकेगे। नही—नही——नही—मै ऐसा न कर सकूंगा। फिर मै अहिसा के सिद्धान्त को नही मान सकता—नही मान सकता।

[विकलता के साथ टहलता है]

किन्तु सगठन से क्या नही हो सकता ? मेरा इस अहिसात्मक आदोलन से किसी भी प्रकार का मतभेद नही बिना भय के कभी प्रीति नही हुआ करती। इन अग्रेजों को, इस काली नोकरशाही को समय समय पर सबक सिखाते ही रखना पड़ेगा अत्याचारियो को चुन चुन कर मौत के घाट पहुचाना ही होगा। ओह, निर्दोष व्यक्ति पर कोडो की मार। मै भूल नही सकता। इन १५ कोडो के बदले न जाने कितने गोरो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। पापियो, सावधान, आज

आजाद सचमुच आजाद है। उसके बदन मे तो अब तुम हाथ भी न लगा सकोगे। उसे जीवित पकड़ लेना ब्रिटिस साम्राज्य की शक्ति के बाहर की बात होगी।

: अब जान पर खेल कर भारत माता के बधन खोलने होगे आजाद। फासी का तखता अपने लिये अब फूल की शैया होगी। आजसे मै गुलाम नही हूँ। मैं आजाद हूँ। मै आजाद हूँ। मै आजाद हूँ।



प्रथम अंक नवम दृश्य

[दो नवयुवक बात करते हुये आते है]

एक . मैं कहता हूँ कि इन सब कामो से देश का किसी भी प्रकार का कोई लाभ न होगा। इस प्रकार न जाने कितने देश भक्त जवानो को यह विदेशी हुकूमत फाँसी के तख्ते पर चढा देगा रोशन।

रोशन यह अपना अपना दृष्टिकोण है राजेन्द्र। मै अहिंसात्मक आन्दोलन के विरुद्ध नही हूँ किन्तु हमारा आन्दोलन भी कुछ अर्थ रखता है। सम्भव है हमारे आन्दोलन को सफलता न मिले किन्तु हमारी इन अहिसात्मक कार्यवाइयों से गान्धी जी के आन्दोलन को अवश्य ही प्रगति मिलेगी।

राजेन्द्र यह कैसे ? मेरा विचार है कि इन कामो से सरकार को हमे कुचलने का अच्छा खासा अवसर मिल जाता है।

व्यर्थ ही मे हमारे नवजानो की जाने चली जाती है । एक के स्थान पर चार फांसी पर चढा दिये जाते है ।

रोशन — यहाँ तुम भूल रहे हो राजेन्द्र । हमारे अहिसात्मक सत्याग्रहियो पर भीषण से भीषण अत्याचार करते यह निर्लज्ज सरकार नही लजाती स्त्रियो तथा बच्चों पर भी पजाब तथा अन्य स्थानों पर अमानुषिक अत्याचार के समाचार आये है । सरकार को भयभीत करने के लिए भी तो कुछ हमारे पास होना चाहिए । अत्याचारियो को थोड़ा बदला भी लगे हाथो मिलते चले जाना चाहिए ।

राजेन्द्र — मगर निर्दोष व्यक्तियो को—

रोशन — तुम व्यर्थ की बात कर रहे हो राजेन्द्र । जब हम एक देश व्यापी आन्दोलन चला रहे है । स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सब कुछ स्वाहा कर रहे है तो फिर कौन दोषी और कौन निर्दोष है यह निर्णय करना ही भारी भूल है । यह देश हम सब का है प्रत्येक भारतवासियो पर इसको स्वतन्त्र करने का भार है ।

राजेन्द्र : इसका अर्थ

रोशन : इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को आजादी के लिये कुछ न कुछ तो कुरवानी करना पड़ेगी चाहे वह इच्छा से दे या अनिच्छा से । हम किसी अंग्रेज को जब गोली का शिकार बनाते है । तो किसी व्यक्तिगत शत्रुता से तो ऐसा नही करते फिर उस व्यक्ति की हत्या करने का दोष हमारे ही ऊपर क्यो है ? उसका दोष सब पर है । सारे राष्ट्र पर है ।

राजेन्द्र तो तुम्हारे कहने का अभिप्राय यह है कि हत्या चाहे जो करे उसका दोष सारे देश पर है ।

रोशन निश्चय ही हमको देश के लिए फॉसी पर चढने के लिए नवयुवक चाहिए । चाहे वे इच्छा से सामने मैदान मे आये चाहे अनिच्छा से :

राजेन्द्र : किन्तु यह बात तो न्याय सगत नही है । रोशन । जो अपनी इच्छा—

रोशन : आजादी की लड़ाई का किसी व्यक्ति विशेष पर ही उठने का ठेका नही है ।

हम सब को कन्धा से कन्धा मिला कर लड़ना चाहिए। जो लोग इस महायज्ञ में योग नही देना चाहते है। मै उन्हें स्वार्थी कहता हूँ। वे अपने निजी स्वार्थ के कारण ही ऐसा नही करते।

राजेन्द्र : अब तुम्हारी बात मेरी समझ में आ चली है रोशन। हमारा काम—

रोशन : तुम ठीक समझ रहे हो राजेन्द्र हमारा काम उन अत्याचारियों को दण्ड देना है जो हमारे देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई लडने बाले बीर सिपाहियों के कार्य मे रोडा बन कर आते हैं! हमारा काम उन अकडबाजो को धराशायी कर देना है। जो अहिसात्मक सिपाहियों पर अपने हाथ तौलना चाहते है। हमारा काम उन राजभक्तो को सबक सिखलाना है जो हमारी आजादी की लडाई में सहायक न होकर शत्रु के हाथ मजबूत करते हैं। समझ गये न ?

राजेन्द्र · ठाक। अब मैं तुम्हारे इस आन्दोलन का अर्थ समझ गया। अब मै तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ रोशन

भइया कि मै तिल तिल कर के कट जाऊँगा किन्तु तुम्हारे तथा तुम्हारी पार्टी के साथ विश्वासघात न करूंगा ।

रोशन तब ठीक है । आज मै तुम्हे अपने महान नेता से मिला दूगा । वे ही हमारे इस दल का सचालन करते हैं । जेल से छूट कर उन्होने अपने इस दल का सगठन किया है । उनकी अपूर्व शक्ति है राजेन्द्र । उनके चेहरे जैसा तेज तो मैने आज तक किसी के चेहरे पर देखा नही । निशाना ऐसा अचूक लगाते है कि क्या मजाल कि शिकार बच कर निकल जाय । वे हमारे गुरू है । उन्ही के पास तुमको ले चलूँगा वे आदमी को पहिचानते है ।

राजेन्द्र : उनका नाम

रोशन चन्द्रशेखर आजाद । हम लोग उन्हे पडित के नाम से सम्बोधन करते है ।

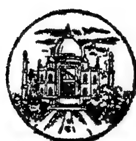
राजेन्द्र उनके कितने साथी है रोशन भइया ?

रोशन : हमारे दल मे अग्नि—परीक्षित ही व्यक्ति आ सकते है । गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन की भाति प्रत्येक व्यक्ति उसमे सम्मिलित नही हो सकता । अपनी जान हथेली पर रख कर ही कोई हमारे आन्दो-

लन का सिपाही हो सकता है। हमारे दल के ऐसे वीरो मे हैं श्री रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिह, श्री राज गुरू, श्री सुखदेव, श्री अशफाकुल्ला, श्री भगवती चरण आदि।

राजेन्द्र किन्तु इस दल का कार्यक्रम ?

रोशन वह सब तुम्हे दल मे शामिल हो जाने के बाद मालूम हो जायगा। आज हमारे दल की एक आवश्यक बिषय को लेकर बैठक होने वाली है। समय हो चुका है, मुझें अब वहा पहुँच जाना चाहिए। अच्छा अब चल रहा हूँ।



प्रथम अंक   दशम दृश्य

[कानपुर के प्रताप प्रेस का एक गुप्त कमरा]

[क्रान्तिकारियो की एक गुप्त बैठक हो रही है । रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला, सरदार भगत सिह, रोशनलाल, राजेन्द्र लाहिडी राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य लोग]

रामप्रसाद : हमारा कार्यक्रम बिलकुल तैयार है । हम को आशा है कि हमको पूर्ण सफलता मिलेगी । आपलोगो को भिन्न भिन्न समय तथा भिन्न २ गाडियो से लखनऊ कलतक पहुँच ही जाना है । किन्तु यह ध्यान रहे कि समय की पाबन्दी ही हमको कामयाबी दिला सकेगी ।

राजगुरु : लेकिन अभी तक सरदार नही आए । मुझे तो आशंका होने लगती है । मेरी चिन्ता बढ रही है ।

सुखदेव : सरदार के विषय मे चिन्ता कैसी? कानपुर की पुलिस मे तो इतनी क्षमता नही है

कि वह उनका बाल बॉका भी कर सके। वे तो अधिकतर पुलिस वालो के साथ रहते ही है । पुलिस वालो ही से तो उनका दोस्ताना है। हा हा हा हा।

भगतसिंह सूरत बदलने मे तो कमाल हासिल है सरदार को। उस दिन झॉसी के पुलिस कप्तान को जो चक्मा दिया उसको याद करके तो मेरी हँसी रोके भी नहीं रुकती।

रामप्रसाद : ओ हो, अगर ब्रिटिश सरकार की प्यारी दुलारी नौकरशाही की बुद्धिमता के नमूने सुनना होतो सुनो मै एकबार अमुक जगह से अमुक जगह की यात्रा कर रहा था। सूटेड बूटेट मै फर्स्ट क्लास मे तो यात्रा कर ही रहा था मेरे पास रिवाल्वरो से भरा हुआ सूट केस था। भूल से वह खुला ही रह गया था। जब मैं स्टेशन पर उतरा तो कुली के सिर पर सूट केस लदवा दिया। जैसे ही कुली प्लेट फार्म पर उतरा कि सूट केस उसके सिर पर से गिर गया और प्लेटफार्म पर सारे रिवाल्वर फैल गये। मैं जरा घबराया लेकिन फौरन एक युक्ति सूझ गयी। मेरे हाथ में एक बेत था। मैने सड़ासड़ कुली

के लगाने शुरू कर दिये। काफी भीड़ एकत्र हो गयी। मैने कहा सुअर देख कर नही चलता। न जाने किस गधे का सूट केस मेरे उपर पटक दिया। मैने फिर बेत बरसाने शुरू किये। लोगो ने ,जिसमे कुछ पुलिस वाले भी थे, मुझे समझाया तथा कुली को मुआफ कर देने के लिए कहा। मैं गाली देता बड़वड़ाता बाहर हो गया। उस समय पुलिस भीड़ मे सूट केस के स्वामी को खोज निकालने मे रत थी। हा हा हा हा।

राजगुरु : हिन्दुस्तानी पुलिस जैसी निकम्मी है शायद ही किसी देश की हो—

[आजाद का प्रवेश]

आजाद : जरा सी देर हो गयी मुझको। खैर, अब काम की बात हो जाना चाहिए। आप लोग कल शाम तक लखनऊ पहुँच जायेगे रोशन उद्दौला की कोठी के पास। आशा है आप सब लोग समझ गये होगे। वहा से हमारे रवाना हो जाने का कार्यक्रम बन जायगा। रामप्रसाद जी आप लोगो का नेतृत्व करेंगे। मैं तो अब आपको उसी कार्य स्थलपर ही मिलूँगा।

रामप्रसाद	ठीक । आप चिन्ता न करें किन्तु—
आजाद	किन्तु क्या ?
रामप्रसाद	किन्तु श्री अशफाकुल्ला का कहना है कि—
आजाद	वह सब मे समझ गया । आप और अश-फाकुल्ला साथ ही साथ रहेगे । साथ मे त्रिवेदी जी को भी ले लीजियेगा । समझ गये आप ?
रामप्रसाद	ठीक । मै सब समझ गया ।
आजाद	तो फिर मै चल रहा हूँ । अच्छा, बन्देमातरम् ।



प्रथम अंक एकादशः दृश्य

[काकोरी का स्टेशन]

[स्टेशन मास्टर और सिगनेल मैन बात कर रहे हैं]

सिगनेलमैन : बीड़ी पिलाई आपका साहब ?

स्टेशन मास्टर : हाँ भाई मैकू, अभी तो गाड़ी आने मे देर है। तब तक एक बीडी ही पी जाय।

[मैकू एक बीडी निकाल कर देता है]

स्टेशन मास्टर : हम लोगो की ड्यूटी भी क्या है मैकू ? रात मे सभी लोग बाल बच्चो के साथ आराम करते है और हम लोग—

[एक उबासी लेता है]

सिगनेलमैन अभी तो बहुत देर है गाड़ी मा बाबू।

स्टेशन मास्टर : तब कोई गाना ही सुनाओ मैकू।

मैकू हम गाना वाना का जानी बाबू? जैस आवत है कहौ वहै सुनाय देई।

स्टेशन मास्टर हॉ हाँ सुनाओ मैकू—होने दो गाना। जरा सुस्ती तो दूर हो।

[मैकू गाता है]

[गाना]

अरारारा सरारारा आई रेल गाड़ी
इस रेलगाडी मे लड़के बहुत हैं'कम्पटता।ओ बिस्कुट लाओ।'
अरारारा सरारारा आई रेलगाडी
इस रेलगाड़ी मे औरते बहुत है 'पाउडर लाओ क्रीम लाओ'
अरारारा सरारारा आई रेलगाडी
इस रेलगाडी मे मुसाफिर बहुत है'पूड़ी लाओ कचौड़ी लाओ'
अरारारा सरारारा आई रेलगाड़ी

[गाडी आने की आवाज आती है]

मैकू — उठो सरकार गडीवा आय पहुँची।

[गाडी आकर रुकती है]

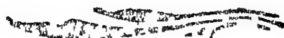
[चारो ओर से कई नौजवान निकल कर पिस्तौल तान देते है]

एक नौजवान — खबरदार, अगर मौत के घाट न उतरना चाहते हो तो वही रहो। खिड़की के बाहर कोई सर न निकले।

[गाडी से खजाना निकालते है]

[स्टेशन मास्टर और मैकू को बाध कर डाल देते है]

[गोरे ड्राइवर को गोली मार देते है]



द्वितीय अंक　　　　प्रथम दृश्य

[कानपुर मेस्टन रोड का एक मकान। चन्द्रशेखर आजाद कुछ मित्रो के साथ चाय पी रहे है]

एक मित्र　　आज आप कुछ थके से मालूम पड़ रहे है पण्डित जी।

[आजाद एक ठहाका लगाते है]

आजाद　　यह तुमने खूब कही सेठ जी। अरे अपने लोग तो सदा मस्त रहने वाले जीव है। यहा चिन्ता किस बात की।

साकी को दिखा देगें यह हाल फकीराना
टूटी हुई बोतल है फूटा हुआ पैमाना।

[फिर एक ठहाका लगाते हैं]

सेठ जी　　आप माने या न माने लेकिन आज कुछ—

[दरवाजा खटकता है]

सेठ जी　　कौन ?

[उठकर दरवाजा खोलते है]

[एक व्यक्ति आता है]

आजाद : कौन, बच्चन ? कहो क्या समाचार ? हम तो तुम्हारी रास्ता ही देख रहे थे :

बच्चन बुरा समाचार है भइया । काकोरी केस का फैसला हो गया ।

[आजाद उत्सुकता के साथ बच्चन की ओर देखते है]

आजाद फैसला हो गया ? क्या हुआ बच्चन ? फाँसी ? यही न ?

बच्चन हाँ भइया । बिस्मिल, रोशन, राजेन्द्र तथा अशफाक को फाँसी । ओह मै तो फैसला सुनकर जरा नर्वस सा हो गया हूँ भइया ।

[आजाद ठहाका लगाते है]

आजाद . पागल कही के ? इसमे नर्वस होने की क्या बात है । देश–भक्त को ब्रिटिश राज्य मे फाँसी नही तो क्या फूलो की शैया मिलेगी ? हा हा हाहाह ।

बच्चन · मगर अशफादुल्ला को तो—

आजाद : अशफाक वीर है । मैं उसे प्यार करता हूँ बच्चन ।

[आजाद के नेत्र कुछ सजल हो जाते है]

बच्चन : तब आपका भइया प्रोगाम ?

(आजाद को फिर हँसी आ जाती है)

आजाद मेरा प्रोगाम ? खाना और मस्त रहना। क्यो भाई साहब ?

सेठ जी अब आपको कुछ विश्राम करना चाहिये।

(आजाद फिर ठहाका लगाते है)

(तभी सेठानी जी का घबडाये हुये प्रवेश)

सेठानी जी · गजब हो गया। पुलिस ने मकान घेर लिया है।

(सेठ जी तथा बच्चन घबडाते है किन्तु आजाद हँसते है)

आजाद इसमे घबड़ाने की बात नही है भाभी। वे मेरा कुछ बिगाड नही सकते। अच्छा मै चला। तुम दो मिनट बाद किवाड़ खोल सकती हो। अच्छा बन्देमातरम्।

(उठ कर कमरे के बाहर हो जाते है)

(पुलिस किवाड खटखटाती है)

सेठ जी · क्या चाहते है आप लोग ?

पुलिस जल्दी से किवाड़ खोलिए। हम आपके मकान की तलाशी लेगे। आपके घर में आजाद छिपा हुआ है।

सेठ जी : आजाद ? कैसा आजाद ? यहाँ आजाद का क्या काम ?

पुलिस . आप किवाड तो खोलिए। नही तो हम को किवाड तोड डालने के लिए मजबूर हो जाना पडेगा।

(सेठ जी किवाड खोल देते है)

(पुलिस सारे घर की तलाशी लेती है)

इन्सपेक्टर : हमको आजाद के यहा होने की मुकम्मिल खबर मिली है।

सेठ जी : अगर आपको खबर मिली है तो आप उसे यहाँ ढूँढ निकालिए। सारा घर तो आपके लिये खुला पडा है।

(पुलिस एक बार फिर तलाशी लेती है)

इन्सपेक्टर माफ कीजियेगा। आपको तकलीफ हुई मुझे खबर तो ऐसी ही मिली थी।

सेठ जी : आप लोग तो कमाल करते है। हम लोगों ने तो आज तक आजाद की शकल भी नही देखी। आप लोग उसे ढूढ़ने हमारे ही यहाँ आ पहुँचे। अच्छा साहब सलाम।

(पुलिस वाले चले जाते है)

सेठ जी : आजाद और बच्चन चले किधर गये आखिर ?

सेठानी वे तो छत पर चले गये थे।

(थोडी देर मे आजाद मुस्कराते हुये आकर खडे हो जाते है)

आजाद · नमस्ते भाई साहब। अगर पुलिस वालों से छुट्टी मिल गयी हो तो अब कुछ खाने पीने की बात की जाय।

सेठ जी हय आप ? आप चले किधर गये थे।

आजाद चला कहा गया था। सिर्फ पटकापुर तक घूम कर लौट आया।



द्वितीय अङ्क   द्वितीय दृश्य

[फासी की कोठरियो मे काकोरी के बन्दी बिस्मिल राजेन्द्र तथा रोशन और अशफाक बन्द है]

बिस्मिल   अशफाक

अशफाक   क्या हो रहा है भाई ?

बिस्मिल   मै पूछता हूँ कि कर क्या रहे हो ?

अशफाक   · सिवा एक काम के और इस वक्त करने को रह ही क्या गया है। अंग्रेजो के नाम पर फातिहा पढ रहा हूँ बस।

[बिस्मिल खिलखिलाकर हँसते है]

बिस्मिल   और यह रोशन क्या करता रहता है ?

अशफाक   वह भी अंग्रेजो के नाम पर आँसू बहाया करता है।

बिस्मिल   : अरे रोशन

रोशन   भाई साहब

बिस्मिल   यह मुहर्रम सा क्या फैलाये रहते हो। जिन्दगी की इन गिनी चुनी चार घड़ियों

मे तो हमको जी भर कर हँसना चाहिए क्यो राजेन्द्र ?

राजेन्द्र : इस मस्ती के आलम मे भी कभी कभी अपने साथियो की याद आ जाती है बिस्मिल भइया।

बिस्मिल : हम अपना काम कर चुके राजेन्द्र। भारत माता की बलिवेदी पर केवल शीश ही चढाना शेष रह गया है। अब वह मुबारक दिन भी आजकल मे आने ही वाला होगा। क्यो अशफाक ?

[पुलिस आकर अशफाक की कोठरी खोलती है]

पुलिस कप्तान : अशफाक साहब, आपका ट्रान्सफर फैजाबाद जेल को हो गया है। आपको अभी जाना पडेगा।

अशफाक : जहाँ ले जाइयेगा वही चलूँगा।

[बिस्मिल की कोठरी के सामने जाकर खडा होता है]

अशफाक : बिदा, साथियो, मै फैजाबाद जा रहा हूँ। अफसोस, इस हुकूमत में हमको साथ साथ मरने की भी आजादी नही है। अच्छा दोस्तो आखिरी सलाम। बन्देमातरम्।

सब : बन्देमातरम्

[अशफाक को ले जाते है]

बिस्मिल चला गया। भारतमाता का एक लाडला सपूत देश के प्रति ऋण की अन्तिम पाई चुकाने के लिये हमसे बिछुड कर सदा के लिये चला गया। ओह प्यारा अशफाक ·

[अपने आँस पोछता है]

रोशन · राम भाई, मुझे तो ऐसा मालूम पडता है है कि हम लोग कुछ अधिक न कर सके। अपनी गलतियो से जल्द ही पकड गये। मुझे तो ऐसा मालूम पडता है कि देश की आजादी की लडाई के लिये गान्धी जी का ही रास्ता सही है।

बिस्मिल : तुम किसी हद तक ठीक कह रहे हो रोशन मगर तुम्हे न भूल जाना चाहिये कि गान्धी जी का अहिसात्मक आन्दोलन एक ही बार मे सफल न हो जांयगा। दमन की आधिया बार बार गान्धी जी के आन्दोलन को निगल जॉयगी किन्तु ससार में कोई शक्ति उस चिनगारी को न बुझा सकेगी जो समय पर धधक कर उग्र रूप धारण कर लेगी। उस समय वही आधिया अग्नि को और अधिक सहायक होगी।

रोशन यह तो तुमने गान्धी जी के आन्दोलन की बात कही है। हमारे आन्दोलन—

बिस्मिल : हमारा आन्दोलन उस चिनगारी को कभी न बुझने देगा। सदा उसे प्रज्ज्वलित ही करता रहेगा।

रोशन किन्तु इस समय तो देश मे गान्धी जी का आन्दोलन भी शिथिल पड गया है और हम लोग जेल में है। अब क्या होगा रामू भइया ?

बिस्मिल : इसका निर्णय हमारी पार्टी करेगी।

रोशन : लेकिन हमारी पार्टी तो छिन्न भिन्न हो गयी है इस समय। अब क्या होगा ?

बिस्मिल : चन्द्रशेखर आजाद के जीवित रहते हमको किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं है रोशन। फिर हमने तो अपने कर्त्तव्य को पूरा कर दिया है। हमारी फासी भी देश मे एक लहर लायेगी। देश की जनता इतनी जल्दी हमको भूल थोडा ही जायगी। अब सबेरा होने मे थोडी ही देर रह गयीहै, रोशन। सम्भव है कि यह रात हमारे जीवनकी आखिरी रात हो।

रोशन　　　　: तो क्या आज ही सबेरे हम लोगों को फाँसी के तख्ते को चूमना पड़ेगा ?

बिस्मिल　　　. अब हमारा सफर नजदीक ही मालूम पड़ रहा है रोशन। हमारी तमन्नायें पूरी हो गई है। सिर्फ एक हसरत—एक हसरत बाकी रह गई है और वह है माँ के चरणो मे अपना शीश चढाना। शायद वह पुण्य घडी आज ही हो।

[सुपरि० जेल, जमादारो तथा पुलिस का प्रवेश]

जेलर　　　　. अभागे कैदियो, आज तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी दिन है। फासी के तख्ते के लिए तैयार हो जाओ।

सब का एक साथ . बन्देमातरम्।

बिस्मिल　　　: हम अभागे नही इस देश मे सबसे अधिक भाग्यवान व्यक्ति है जेलर साहब। भारतमाता के चरणो में अपने तुच्छ शीशों की भेट चढ़ाकर हम अपने जन्म को सार्थक करेगे। आज हमारी जिन्दगी का आखिरी दिन नही हमारे जीवन की अमरता का पहला दिन है।

[तीनो कोठरियो से बाहर निकाले जाते है। जमादार उन्हे बाधना चाहता है]

बिस्मिल : हमको बाँधने की जरूरत नही है जमादार। हम फांसी के तख्ते से भयभीत नही है। तुम लोग देखोगे कि हम लोग उस फासी के तख्ते को प्रेम के साथ चूमने के लिए कितने लालायित है। चलो हम चल रहे है।

[पुलिस कैदियो को ले चलने के लिये उद्यत होती है]

बिस्मिल : चलो साथियो, आज प्रसन्नता से हमारे हृदय कितने गद्गद् है। भगवान से प्रार्थना है कि हमारा यह बलिदान ऐसा रङ्ग लाए, हमारे देशवासियो के दिलों मे देश-भक्ति की ऐसी अग्नि प्रज्ज्वलित करे जिसमे यह अंग्रेजी हुकूमत ही क्या सारा साम्राज्यवाद जल कर भस्म हो जाये। और हम—

दरो दीवार पै हसरत से नजर करते हैं
पास जो कुछ है वह माता की नजर करते है
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं

[सब चले जाते हैं]

[सीन का ट्रांसफर होना]

[फासी का दृश्य]

[पुलिस तीनो कैदियों को लेकर आती है]

पुलिस कप्तान : कोई आखिरी ख्वाहिश ?

[बिस्मिल ठहाका लगा कर गम्भीर हो जाता है]

बिस्मिल : अब न पहिले वलवले हैं और न अरमानो की भीड़
एक मर मिटने की हसरत इस दिले बिस्मिल में है

पुलिस कप्तान : फिर भी

बिस्मिल : कुछ नही, कोई ख्वाहिश नही, जो कुछ न पाना था वह पा गया। अब कौन सी ख्वाहिश बाकी रह सकती है हा फिर भी एक ख्वाहिश—एक तमन्ना—

पुलिस कप्तान : हां हां कहो

बिस्मिल : एक बार माता के चरणो मे शीश की भेंट चढाने मे न जाने क्यो जी नही भर रहा है मित्रो। यही ख्वाहिश है कि इस देश मे बार बार जन्म लूं और बार बार भारतमाता के चरणो पर मुझे शीश चढ़ाने का अवसर मिले।

बलिदान हों माता पै चढें शीश बार बार
तन तार तार हो पै बदले नहीं विचार
यदि जन्म हो मेरा तो इसी देश ही में हो
यदि मृत्यु हो कभी तो इसी देश ही में हो

(पुलिस फासी के तख्ते की ओर ले जाना चाहती है)

विस्मिल : आप तकलीफ न करें श्री मान् । फासी के पुनीत तख्ते पर मुझे अपने आप ही जाने दे,उस पवित्र फदे को मुझे अपने हाथ ही से गले मे डालने दे। अच्छा देशवासियो सबको मेरा आखिरी प्रणाम । बन्देमातरम्

(फन्दा गले मे डाल लेता है । साथ ही रोशन और राजेन्द्र भी अपने गलो मे फन्दा डालते है)

सब : बन्देमातरम्

(झूल जाते है)



द्वितीय अंक तृतीय दृश्य

(सुपरि० पुलिस का बंगला। साहब आराम कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं)

पुलिस कप्तान : ओह इस आजाद ने भी क्या गजब का हङ्गामा मचा रक्खा है। कम्बख्त हाथ ही नही आता। इस वक्त सायमन कमीशन की एक परेशानी मौजूद ही थी। साथ ही यह बदमाश कही कुछ गड़बड़ न मचा दे। ओफ्!

(एक खुफिया का सिपाही आता है)

पुलिस कप्तान : क्या खबर है?

खुफिया : बहुत बढिया खबर है हूजूर। एक जगह आजाद का पता चला है। आप जल्दी ही करें।

पुलिस कप्तान : ओह ऐसी बात है? चलो—जाओ ड्राइवर से मोटर लाने को कहो।

(खुफिया चला जाता है)

पुलिस कप्तान · अगर यह कम्बख्त आजाद पकड जाय तो एक बड़ी भारी मुश्किल आसान हो जाय। अगर आज मिल गया तो फिर क्या कहना——परेशानी भी दूर होगी और इनाम भी हाथ लगेगा। मगर वह यहा——

(ड्राइवर मोटर लेकर आता है साथ मे वही खुफिया का आदमी)

पुलिस कप्तान किधर चलना होगा।

खुफिया · हुजूर चलो मे रास्ता बतलाता हूँ। आज वह भाग न सकेगा। हुजूर इतमीनान रक्खे।

पुलिस कप्तान क्या मोटर पर वहा जाया जा सकेगा।

खुफिया मोटर थोडी ही दूर तक जा सकेगी फिर तो हमको पैदल ही चलना पड़ेगा।

पुलिस कप्तान · अच्छा चलो।

(ड्राइवर मोटर पर दोनो को लेकर जाता है)

(सरदार भगत सिह का प्रवेश। हाथ मे रिवाल्वर लिये हुये)

भगतसिह : बहुत छिप कर आना पड़ा है। मगर न जाने क्यो आज आजाद ने इसी बगले पर मुझे मिलने का वक्त दिया था। यह तो पुलिस कप्तान का बगला मालूम पडता

है। यहा तो—कोई आ रहा है—बगल मे छिप कर देखूँ—

(ड्राइवर मोटर लेकर लौटता है। भगतसिह छिपता है)

ड्राइवर · ओफ्, आज तो मालूम पड़ता है हमारे साहब आजाद को जरूर ही पकड़ लेंगे। हा हा हा हा। आजाद को पकड़ लेना खाला जी का घर है न ?

(भगतसिह बाहर निकल कर आता है)

ड्राइवर · कौन ?

भगतसिह · हम कप्तान से मिलना चाहते है।

ड्राइवर : कप्तान साहब घर पर नही है। चन्द्र शेखर आजाद को पकड़ने गए है। आप—आप—

भगतसिंह : मैं बाहर से आया हूँ। कप्तान साहब से एक काम के लिए भेंट करना है।

ड्राइवर तुम झूठ बोलते हो।

(एकाएक पिस्तौल निकाल कर भगतसिह पर तान देता है)

ड्राइवर : हाथ ऊपर करो। मैं तुम्हें पहिचानता हूँ। तुम सरदार भगतसिह हो। आजाद के साथी।

(भगतसिह हाथ ऊपर उठाता है)

ड्राइवर : सरदार भगतसिंह, शायद तुम यहां आजाद से ही मिलने आये थे। यही न ?

(भगतसिंह जोर से हंस पड़ता है)

भगतसिंह : आप आजाद—

(भगतसिंह के गाल पर धीरे से चपत लगाता है)

आजाद : चुप बदमाश।

भगतसिंह : कमाल है उस्ताद आपको। आज तो मैं आपको बिलकुल ही पहिचान न सका।

आजाद : साहब आजाद को पकड़ने गये है। आओ अन्दर चल कर हम लोग चाय पिये। साहब की मेहमानी कबूल करे। हा हा हा हा



द्वितीय अङ्क   चतुर्थ दृश्य

[एक मकान मे क्रान्तिकारियो की गुप्त बैठक ।
राजगुरू : सुखदेव : बैशम्पाइन . बटुकेश्वर तथा अन्य]

राजगुरू . यह सब जान बूझ कर किया गया है सुखदेव । यह हमको चुनौती दी गयी है ।

सुखदेव लाला लाजपतराय पर लाठियो का प्रहार करके नौकरशाही ने सारे देश का अपमान किया है । लाला जी की मृत्यु एक साधारण घटना नही है । हमको इस विषय मे बड़े ही गभीर रूप से विचार करना है । इस अपमान का बदला लेना है ।

बटुकेश्वर दत्त : मेरे विचार से तो पजाब के गवर्नर को ही इस दुनिया से उठा देना चाहिए । तभी थोड़ा सा बदला चुकाया जा सकेगा ।

राजगुरू बिना आजाद की सलाह के हम एक कदम भी नही उठा सकते हमको उनके आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए ।

सुखदेव : काकोरी केस के सम्बन्ध मे बिस्मिल, राजेन्द्र आदि को फांसी पर लटका कर सरकार समझने लगी है कि उसने हमारी पार्टी का अस्तित्व ही मिटा दिया हैं। हमको यह सिद्ध करना पडेगा कि उन्हे सीधा मार्ग दिखलाने के लिए अभी हमारी पार्टी व्यापक रूप से मौजूद है।

बटुकेश्वर दत्त : हमारी पार्टी को अब एक ठोस कदम उठाना है। इस नौकरशाही को सबक सिखलाना है ।

राजगुरू निश्चय ही। मगर आजाद को काफी देर हो गयी है

[आजाद और भगतसिह का प्रवेश]

आजाद बन्देमातरम्। कामरेड्स मुझे आज जरा विलब हो गया।

[बैठ जाता है]

राजगुरू आज हमको एक कार्य-क्रम निश्चित करना है।

आजाद : हमारा पहिला कार्य क्रम क्या है जानते हो ?

राजगुरू : हम लोग यही तो जानना चाहते है।

आज़ाद　　　: लाला लाजपतराय के हत्यारे को समाप्त करना ।

सब एक साथ　· ठीक । बिल्कुल ठीक ।

आजाद　　　हमारी पार्टी का काम कुछ ढीला पड गया है । हमको फिर एक बार जनता के सामने आना है । उसकी सहानुभूति को अपनाना है

सब　　　　ठीक । बिल्कुल ठीक ।

आजाद　　　अब हम चुप नही बैठ सकते । हमको एक बार फिर जनता मे हलचल मचाना है । ब्रिटिश सरकार के कान खडे करना है । अफसोस अगर काकोरी केस के कारण हमारा काम ढीला न पड़ जाता तो आज नौकरशाही को इस प्रकार लालाजी पर हाथ छोड़ने का साहस न होता । तब फिर लालाजी के हत्यारे को ठिकाने लगाने का भार कौन अपने ऊपर ले सकता है

भगतसिंह　　· हम

राजगुरू　　　हम

सुखदेव　　: हम

आजाद　　: शाबास । लेकिन यह कार्य बड़ी चतुरता से करना है । निशाना ठीक लगाना है ।

मैं स्वय इस कार्य को हाथ मे लूँगा। तुम सब लोग मेरे साथ रहोगे। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल शाम से पहिले ही लाला जी का हत्यारा इस ससार से बिदा हो जायगा।

सभी बन्देमातरम्

आजाद : लेकिन एक बात है मेरे दोस्तो। अभी हमको इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य करना है। एक बार हम ऐसा तहलका मचायेगे कि नौकरशाही थर्रा जायगी। हम जान हथेली पर लेकर आगे बढेंगे। लेकिन याद रहे कि हमको अपना प्रोग्राम पूरा करने के लिए अपने को बहुत बचा कर रखना है।

भगतसिह ठीक है कामरेड। लेकिन हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम कुछ प्रदर्शन भी करें और

आजाद ठीक है मेरे साथी। हम उस पर भी विचार करेगे लेकिन शीघ्र ही गान्धी जी का आन्दोलन फिर प्रारम्भ होने वाला है। हमको उस आन्दोलन की सहायता के लिए नौकरशाही को इसलिए भयभीत रखना पडेगा जिससे वह जनता तथा स्वयँ सेवको पर अधिक अत्याचार करने का साहस न कर सके। समझ गए न?

राजगुरू किन्तु हमारा काम ?

आजाद तुम ठीक कह रहे हो मेरे दोस्त । हम अपने आन्दोलन से दुबारा इस देश से अंग्रेजो को निकाल नही सकते । सफल तो गाधी जी का ही आँदोलन होगा । किंतु निस्सहाय, निशस्त्र तथा अहिंसात्मक नेताओ पर हम अपने आँदोलन के द्वारा अधिक अत्याचार न होने देगे।

भगतसिंह · फिर हमारा अस्तित्व ही क्या होगा?

आजाद : तुम भूल रहे हो भगतसिह । हमारा बलिदान व्यर्थ न जायगा । जब आजादी का इतिहास लिखा जायगा तब सबसे पहिले स्वर्णाक्षरो मे तुम्ही लोगो का नाम लिखा जायगा बीरो । हमारा मार्ग कुछ भी हो किन्तु

[एक आदमी दौडता हुआ आता है]

आदमी : कामरेड, कामरेड जल्दी करो । पुलिस ने मकान घेर लिया है ।

(आजाद हँसते है)

(सभी लोग एक पीछे के रास्ते से निकल भागते हैं)

(पुलिस आकर खडी रह जाती है)

पुलिस कप्तान ओह कम्बख्त आजाद फिर आज हाथसे आकर निकल गया । अफसोस ।

भक्त को भी खुश रखता हूं और भगवान को भी। अंग्रेज को भी खुश रखता हूँ और देश के नेताओं को भी। चन्दे की मार ऐसी निराली मार है जिसका मन्त्र अगर किसी ने समझा है तो सिर्फ सेठ मगरदास ही ने।

(नौकर का प्रवेश)

रामू — सरकार सरकार कुछ कांग्रेसी आपसे मिलने आये है।

मगरदास — कांग्रेसी—अररररर ठहर जा रामू। मेरी सुराज वाली टोपी तो ले आ——अरे जल्दी जा.........

(रामू चला जाता है)

मगरदास — हाय हाय, ये कांग्रेसी क्यो आये हैं ? सेठ मगरदास से कुछ चन्दा ही मांगने आए होगे। सिवा चन्दा मागने के इनके पास और धन्धा ही क्या है ?

(रामू गाधी टोपी लेकर आता हैं)

मगरदास — (टोपी पहन कर) जा जा, अब उन्हे जल्दी बुलाकर ला।

(रामू चला जाता है)

मगरदास · वाह रे देश-भक्त सेठ मगरदास । अभी देखो इन देश--भक्त नेताओ को थैली के बल पर कैसे बिल्ली बनाता हूँ ।

(रामू के साथ दो कांग्रेस मैनो का प्रवेश)

मगरदास आइए, पधारिए, जय गाँधी जी की । जय सुराज भगवान की—बन्देमातरम् ।

काँग्रेसी · बन्देमातरम् सेठ जी । कहिए आप का स्वास्थ्य तो ठीक है ?

मगरदास : अजी साहब, इन अग्रेजो की हुकूमत मे रह कर भला किस हिन्दुस्तानी का स्वास्थ्य ठीक रह सकता है । कहिए साहब, ये सुराज अब आप लोग कब तक ला रहे है ?

काँग्रेसी . ये सुराज तो अब आप ही लायेगे सेठ जी

मगरदास · सो आप लोग घबराइए नहीं नेता जी । हम लोग सुराज-लाकर ही रहेगे । देखिए अब मैं गाँधी टोपी भी पहिनने लगा हूँ । सुराज को तो अब आना ही पड़ेगा ।

काँग्रेसी : अरे आप तो पुराने देश—भक्त है सेठ जी । अच्छा तो इस समय— —

मगरदास कुछ चन्दा-वन्दा चाहिए क्या ?

कॉंग्रेसी . हॉं, इधर कुछ

मगरदास कोई बात नही, कोई बात नही । मगर दास तो आपका सेवक ही है, लेकिन जरा—

कॉंग्रेसी ये जरा क्या ?

मगरदास मैं जरा विज्ञापन से डरता हूँ । मै जो कुछ भी दूँ उसे आप गुप्त दान ही समझे

कॉंग्रेसी और रसीद ?

मगरदास : अजी कैसी रसीद ? इसे आप अपना ही रुपया समझकर शौक से खर्च करें । मेरा तो कही नाम भी न लीजियेगा । लीजिये।

(एक थैली देता है)

काग्रेसी वाह सेठ जी । आप ही तो सच्चे देश भक्त है । ।अच्छा तो फिर बन्दे ।

मगरदास बन्दे, बन्दे, बन्देमातरम् ।

(काग्रेसी चले जाते है)

मगरदास धत्तेरे की । हत्तेरी टोपी की (टोपी एक तरफ फेक देता है) चले आये जैसे इन्हीके मामा का घर हो । सच पूछो तो इन नेताओ से मुझे सख्त नफरत है । जब देखो तब लाओ चन्दा-लाओ चन्दा । अरी

ओ शारदा की मां–अरी ओ शारदा की महतारी!

(मगरदास की पत्नी का प्रवेश)

शारदा की मां : क्यों गला फाड़ रहे हो ?

मगरदास : अरे, बनठन कर चलीं कहां "ये साड़ी– ये झण्डा——

शारदा की मां : मैं जरा आज सुराज वाली मीटिङ्ग में जा रही हूं।

मगरदास : अररर, ये तुम क्या करने लगीं ? अगर कहीं कलक्टर साहब ने सुन लिया तो——

शारदा की मां : तो क्या हो जायगा।

मगरदास : अरी गजब हो जायगा।

शारदा की मां : क्यों गजब हो जायगा ? जब आप कांग्रेस की जय बोलते हैं, चन्दा देते हैं, अंग्रेजों को कोसते हैं–

मगरदास : अररर---चुप भी रह। अगर कहीं साहब ने सुन लिया तो---

[रामू का प्रवेश]

रामू : सरकार, सरकार।

मगरदास : क्या है रामू ?

रामू : सरकार, बड़े साहब आए हैं।

मगरदास · बड़े साहब ?------क्या सुपडैण्ट साहब ? ---क्या कलेक्टर साहब—अरे बाप रे-— अरे जरा ठहर रामू—-शारदा की मा जल्दी भीतर जाओ—अरे जाओ–ये साड़ी ये झण्डा—-हाय हाय, जल्दी जाओ मेरी मां——

शारदा की माँ · क्या कोई बाघ आ गया है ?

मगरदास अरे वो बाघ से भी ज्यादा हैं शारदा की माँ। अगर कही उसने इस झडे को देख लिया तो वह सचमुच बाघ बन कर सेठ मगरदास को एक ही कौल में डकार जायगा। जा--मेरी माँ—

[शारदा की मा चली जाती है]

मगरदास रामू, अब जा साहब को ले आ।

[रामू जाने लगता है]

मगरदास : अबे ठहर जा रामू। इस हरामजादी टोपी को तो हटा। जा जल्दी से मेरी सरकार वाली टोपी तो ले आ—

[रामू जाता है]

मगरदास हे प्रभू दीनानाथ, दुख भंजन मेरी लाज रखना।

[रामू हैट लेकर आता है]

मगरदास : (हैट पहिन कर) ओफ, अब कही जान मे जान आई। मेरा मुँह क्या देख रहा है रामू ? जल्दी से साहब को ले आ।

[रामू जाता है]

मगरदास : हे हनूमान स्वामी, रावण के इन वशधरो से मेरी रक्षा करना।

[रामू के साथ साहब का प्रवेश]

मगरदास : आइए प्रभो, पधारिए प्रभो। आप 'वेल' तो हैं न ? आपकी हेल्थ गुड तो है न ?

साहब : वेल सेठ मगरदास, हम तुमसे बहुत खुश है।

मगरदास : (प्रसन्नता से उछलकर) ओह आप खुश है ? आप सचमुच खुश है—अब जान मे जान आई। अगर आप खुश है दीनानाथ तो अब भगवान को भी खुश करने की कोई जरूरत नही रह गई। तो फिर आप खुश हैं—एक बार फिर प्रेम से कह दीजिए जगन्नाथ कि आप खुश है ?

साहब : हाँ हा, हम तुमसे बहुत खुश है।

मगरदास साहब खुश है। अब फिर हमारे लिये क्या आज्ञा होती है विश्वनाथ !

साहब : हम तुमको राय बहादुर बनाना मांगता है ।

मगरदास : राय बहादुर, सेठ मगरदास को राय बहादुर——

[प्रसन्नता से नाचने लगता है]

साहब : हाँ हां, तुमको राय बहादुर बनाना माँगता है ।

मगरदास : तो फिर प्रभो अब बना ही दीजिए राय बहादुर । आई एम योर मोस्ट ओवीडियेंट सर्वेण्ट स्टैंडिंग आन वन लेग प्रे इङ्ग फार योर हेल्थ वेल्थ एण्ड प्रास्पोरिटी ।

[एक टांग पर खड़ा होता है]

साहब : ये तुम क्या करने लगा मगरदास ?

मगरदास : सरकार का शुक्रिया अदा कर रहा था ।

साहब : ठीक, बहुत ठीक । अच्छा अब हमको—

मगरदास : कुछ चन्दा चाहिए जगन्नाथ ?

साहब : ठीक, तुम बहुत समझदार आदमी है मगरदास ।

मगरदास : ठीक है विश्वनाथ ! हम तीन पीढ़ी से ऐसे ही समझदार होते आ रहे हैं ।

साहब : पाच हजार चाहिए।

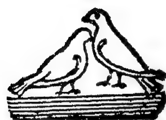
मगरदास : कुल पांच हजार। अभी लीजिए प्रभो।

[लाकर थैली देता है]

साहब गुड सेठ जी। अब तुम शर्तिया रायबहादुर हो गया। थैंक यू।

[चला जाता है।

मगरदास राय बहादुर। अरी ओ शारदा की मा— दौडो दौडो-सेठ मगरदास रायबहादुर हो गया।





द्वितीय अंक षष्ठम् दृश्य

(पुलिस सुपरि० के बगले के बाहर का दृश्य)
(आजाद, भगतसिह, राजगुरू छिप कर आते है)

आजाद इस अंग्रेज को तुम्हारी ही गोली से मरना है भगतसिह। तुम्हारा पीछा करने वाला मेरा शिकार होगा । यदि वह एक गोली से जीवित रहा तो दूसरी गोली राजगुरूकी चलेगी। समझ गये?

भगतसिह मगर आप?

आजाद अब ज्यादा बात करने का समय नही है। जाओ अपने स्थान पर पहुँच जाओ।

(सब यथास्थान छिप जाते है)
(साउ डर्स मोटर साइकिल पर निकलता है)
(भगतसिह गोली मारता है)

भगतसिह : डेविल, ले मर

(पीछे से आजाद आकर उसके एक गोली मारते हैं)

आजाद : फिनिश्ड, भागो भगतसिह

(दोनो भागते हैं । पीछे से एक सिपाही बन्दूक लेकर पीछा करता है)

सिपाही खबरदार

राजगुरू उसके गोली मारते है । गोली उसके पैर मे लगती है वह गिर पडता है)

(आजाद, भगतसिह, राजगुरू भाग जाते है)
(बहुत से सिपाही आ जाते है)

सिपाही पकडो, पकडो, पकडो

(पीछे से फलाट का फटना)

(भगतसिह, आजाद, तथा राजगुरू का साइकिलों पर भागते दिखाई पडना ।)



तृतीय अंक   प्रथम दृश्य

(सभा हो रही है। भीड भाड। एक नेता भाषण दे रहे है)

नेता जी — अब इस नौकर शाही का जुल्म सीमा से बाहर होता जा रहा है। हमको कुचला जा रहा है। हमारे नेताओ को जेल मे ठूस दिया गया है। हमारी जुबानो पर ताले डाल दिये गए है। इस पर हमारे ऊपर एक और नया कानून लागू किया जा रहा है। आप जानते है यह कानून क्या है ? इस कानून का नाम है 'पबलिक सेफ्टी बिल'। पबलिक को कुचल देने वाले कानून का नाम है पबलिक सेफ्टी बिल अर्थात पबलिक की रक्षा करने वाला कानून। समझा आपने ? दिल्ली की धारा सभा मे आज कल यह बिल पेश है। इस बिल की मन्शा हमारी जुबानों पर ताला लगा देना हैं। रौलट कानून का यह दूसरा रूप है।। हम इसका विरोध करेंगे। हमारे पूज्य नेता पं०

मोतीलाल नेहरू, पं० मदनमोहन मालवीय जो इस समय दिल्ली की धारा सभा के सदस्य हैं। इस बिल का विरोध कर रहे हैं, किन्तु उनके विरोध का कोई मूल्य अंग्रेजों की दृष्टि में नहीं है। इस अत्याचार की कहीं सीमा है? इस दमन और ज्यादती का कोई उत्तर है हमारे लिए? नहीं नहीं, परन्तु क्या हम आंख बंद करके इन अत्याचारों को सहन करते जायेंगे। नहीं :

एक आवाज : हम विद्रोह करेंगे

दूसरी आवाज : हम सत्याग्रह करेंगे

तीसरी आवाज : हम आन्दोलन उठायेंगे।

नेता : ठीक है। हमको अत्याचार का प्रतिकार करना चाहिए। हमको आगे बढ़ कर लोहा लेना चाहिए। किन्तु क्या आप में शक्ति है? क्या आप में संगठन है? क्या आप त्याग के लिये तैयार हैं? हमारे लिए सायमन कमीशन भेजा गया। हमने उसे ठुकरा दिया, किन्तु फिर भी एक मनमाना विधान हम पर लादने की तैयारी की जा रही है। हमारी विधान सभायें, हमारी कौंसिलें खिलौना हैं। वे हमको फुसलाने के लिए बनाई गई

है। ऐसी विधान सभाओं को लात मार देना चाहिए। हमको कौंसिल का वहि-ष्कार करना चाहिए। हमारी आजादी की लड़ाई फिर शुरू होने वाली है आपको उसके लिए अपने को तैयार करना है। आपको—

(सहसा पुलिस आ जाती है)

पुलिस — सभा बन्द करो। यह गैर कानूनी काम है। सिपाहियो नेताजी को गिरफ्तार करो।

(सिपाही नेता जी को हथकडी पहिनाते है)

(इनक्लिाब जिन्दाबाद। महात्मा गाधी जिन्दाबाद के नारे)



तृतीय अंक   द्वितीय दृश्य

(दिल्ली में धारा सभा की बैठक)

(प० मोतीलाल नेहरू, प० मदनमोहन मालवीय तथा अन्य नेता भाग ले रहे है)

प० मोतीलाल : यह बिल नही भारतीयो की रही सही आजादी पर कुठारा घात है । पबलिक सेफ्टी बिल के नाम से जनता का गला घोटने की तैयारी की जा रही है । इस पर जरा इसके नाम पर तो गौर कीजिए : पबलिक सेफ्टी बिल ।

(बैठ जाते हैं)

(अर्थ म त्री जार्ज शुस्टर खड होते हैं)

जार्ज शुस्टर सरकार ने जनता की भलाई के लिए ही यह बिल पेश किया है। हमारा मक्सद जनता को उन दगाइयो तथा गुडो से सुरक्षित करना है जो मुल्क के अमनो आमान को खतरे मे डालते रहते है---

(आवाजे 'झूठ, गलत, झूठ')

यह गलत नही है । मुल्क मे डकैती,

चोरियां और कानून को ठुकराने की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। हमारा फर्ज है कि हम इन संगठनों को कुचल दें। इस बिल को पेश करने का यही सरकार का मक्सद है।

(बैठ जाते हैं)

(पं० मदनमोहन मालवीय खड़े हो जाते हैं)

मदनमोहन मा० : मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि कानून गुंडों, चोरों और डकैतों के लिए नहीं बनाया गया है। इसका उद्देश्य देश भक्तों और सारे देश के उठते हुए नौजवानों को कुचलना है।

(आवाजें शर्म शर्म)

मैं कहता हूँ कि यह बिल हमारा गला घोंट देने के लिए है। हमारी जुबानों पर ताला लगा देने के लिए है तथा हमारी रही सही आजादी को पैरों तले कुचल डालने के लिये है। मैं इस प्रकार के बिल का घोर विरोध करता हूँ तथा सरकार को विश्वास दिलाता हूँ कि इस प्रकार के बिल से जनता की विरोधी भावनायें और भी उत्तेजित होंगी और उनका उत्तरदायित्व सरकार पर ही होगा।

('करतल ध्वनि')

जेम्स करार — आज इस मुल्क मे जितनी बदअमनी फैली हुई है वैसी कभी नही थी । अभी थोड़े दिन हुये काकोरी मे ट्रेन लूट ली गई। लाहौर मे दिन दहाड़े साउडर्स को कतल कर दिया गया ·

(सहसा बड़ी आवाज के साथ बम आकर गिरता है)

(हाल मे धुआ भर जाता है। भगदड मचती है । पुलिस 'पकडो पकडो' की आवाज लगाती है ।)

(सहसा गेलरी मे आवाज आती है। 'लॉग लिव रेवोलूशन' 'इनकिलाब जिन्दाबाद' हमने फेका है हमने बम फेका है ।)

(सारे हाल मे 'इनक्लाब जिन्दाबाद के नारे')



तृतीय अंक तृतीय दृश्य

[आनन्द भवन का दृश्य]

[एक कमरे के अन्दर जवाहर लाल नेहरू दो मित्रो के साथ बैठे है]

जवाहरलाल नेहरू · सरदार भगतसिह की फाँसी के लिए जो कुछ करना था वह किया गया किन्तु सरकार टस्स से मस्स नही होना चाहती। ऐसा प्रतीत होता है कि यह गोरी हुकूमत इस मुल्क के किसी भी देश भक्त नौजवान को जिन्दा नही रहने देना चाहती अफसोस, मैने और महात्मा जी ने लार्ड इर्विन से मिलकर भगतसिह की फासी के बारे में काफी बातचीत की है लेकिन—लेकिन——

एक मित्र भगतसिह जैसे देशभक्त की फांसी इस देश की महान दुर्घटना होगी।

जवाहरलाल · हमारे देश के कुछ नौजवानों की जानें

जिस गलती के साथ चली गईं उस बात को जब मैं सोचता हूँ तो दिल को तकलीफ होने लगती है। रोशन, बिस्मिल, राजेन्द्र, लाहिडी, राजगुरू, सुखदेव, भगत सिह—हमारे देश के ये रत्न आजादी की लड़ाई के इतिहास मे अमर रहेंगे। हमारा और इन जवानो की लड़ाई का रास्ता भले ही अलग हो, हमारे सिद्धान्तो में जमीन आसमान का फर्क हो लेकिन इसमें शक नही कि इन नवजवानो ने अपना जो कुछ देश की लड़ाई में कुरबान किया है उसे हम कभी न भूल सकेंगे। आजादी मिल जाने के बाद जब लोग इन वीरो के बलि-दान की सच्ची कहानी सुनेगे और समझेंगे तो उनका दिल इन नवजवानो के प्रति श्रद्धा से भर भर जायगा। मै कहता हूँ—

(एक नौकर आता है)

जवाहरलाल : क्या है

नौकर सरकार एक नौजवान आपसे मिलने आया है।

जवाहरलाल , अच्छा भेज दो।

(नौकर के साथ चंद्रशेखर आजाद आते है)

जवाहरलाल बैठिए, कहिए ।

आजाद . मै एकान्त मे आपका कुछ समय लेना चाहता हूँ।

(जवाहरलाल अपने मित्रो की ओर देखते है वे लोग चले जाते है)

जवाहरलाल · फरमाइये

आजाद मेरा जीवन भर हिसात्मक कार्यों पर अटल विश्वास रहा है। मैं क्रान्तिकारी हूँ। मै आपसे प्रश्न करता हूँ कि यदि अब उस हिसात्मक आन्दोलन की असफलता देख कर मेरा विश्वास उस पर से उठ गया हो तो अब मेरे लिए क्या रास्ता है।

जवाहरलाल . अगर आपका दिमाग सही रास्ते पर आ गया हो तो आप अब हम लोगो के साथ कन्धे के कन्धा भिड़ा कर काम कर सकने के लिये आमन्त्रित हैं ?

आजाद : लेकिन——

जवाहरलाल . लेकिन क्या, तुम आज ही से——

आजाद : लेकिन पुलिस क्या तब हमको पकड़ न लेगी——

जवाहरलाल · फिजूल की बातों में क्या रक्खा है—आप

मेरे साथ आकर काम कर सकते है। आजकल के नवयुवक बात ज्यादा करते है काम कम। फिर आप कोई चन्द्रशेखर आजाद तो हैं नही जो पुलिस आपको ढूढ़ती फिर रही हो।

आजाद — आप ठीक ही कह रहे हैं पण्डित जी। मै चन्द्रशेखर आजाद हूँ।

जवाहरलाल — आजाद ? तुम—तुम चन्द्रशेखर आजाद हो चन्द्रशेखर—आजाद—

(सीने से लगाते हैं)

आजाद — अब आप मुझे आज्ञा दे, मै क्या करूँ। मैं स्वीकार करता हूं कि हमारा रास्ता गलत रहा है लेकिन—

[जवाहरलाल परेशानी मे सोचते हैं]

आजाद — अगर मै सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लूं कि मेरा विश्वास हिंसा से उठ गया है तो क्या नौकरशाही मेरे ऊपर विश्वास करके मुझे क्षमा कर देगी ? तब——

जवाहरलाल — तब- तब—क्या हो सकता है ? क्या हो सकता है ?

आजाद — हमारी पार्टी समाप्त हो गयी है। हमारा

सङ्गठन टूट गया है—अब मेरे लिए उपाय——

जवाहरलाल : मेरे नौजवान, मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ–मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ–मै अशक्त हूँ—मै कुछ भी तो नही कर सकता तुम्हारे लिये आजाद—जवाहरलाल तुम्हारे लिए कुछ नही कर सकता——

[आजाद पण्डित जी की ओर देखता है]

आजाद : मै जानता हू पडित जी कि आपके हृदय मे हम लोगो के लिए असीम प्यार है—स्नेह है—मगर मैं आपकी मजबूरियो को जानता हूं—आप चिन्ता न करें–मै--

जवाहरलाल अफसोस जवाहरलाल उस नवयुवक के लिए कुछ नही कर सकता जिस पर आज देश को नाज है।

[परेशानी के साथ टहलने लगते है]

आजाद मैं जा रहा हूं पण्डित जी। आज मैंने अनुभव किया कि आप कितने महान व्यक्ति है। केवल एक ही प्रार्थना है—देश को तो आजादी मिल कर ही रहेगी आशा

है आप उन दिनो आजाद और उसके साथियों को न भूलेंगे—अच्छा बिदा ।

[आजाद चला जाता है]

जवाहरलाल — मैं इतना अशक्त—मै किसी के लिए आज कुछ नही कर सकता—मै भगतसिह को फासी से नही बचा सकता—मै आजाद को मरने से नही बचा सकता—अफसोस

[परेशानी की हालत मे बैठे रहते है]



तृतीय अंक चतुर्थ दृश्य

[सेठ मगरदास की बैठक। सेठ जी तिजोरी मे रुपया रख रहे है]

मगरदास : चार हजार पाच सौ छप्पन बारह आने —ठीक। दस हजार पाच सौ चालीस। यह भी ठीक। बीस हजार पाच सौ तीन---

[रामू आकर देखता है]

मगरदास तेरह हजार-अबे तू क्या देख रहा है? जा एक गिलास पानी ले आ।

[रामू चला जाता है]

मगरदास . ये नौकर चाकर भी अजब नदीदे होते है अगर भूल से भी इनकी नजर लक्ष्मी जी पर पड़ जाय तो ये हरी-भरी तिजोरी भी एकदम से साफ हो जाय। आठ हजार पाच सौ---

[रामू का प्रवेश]

रामू — सरकार, सरकार

मगरदास — अबे तू फिर आगया ।

रामू — सरकार बढे साहब आये है ।

मगरदास — . साहब आये है ? साहब आये है? साहब आये है तो इस बार मेरे लिए रायबहादुरी जरूर लेकर आये होगे । जा रामू जल्दी से बुला ला ।

[रामू जाना चाहता हैं]

मगरदास — अरे ठहर जा रामू के बच्चे । अरे वह मेरी सरकार वाली टोपी तो ले आ :

[रामू हैट लाकर दे देता है]

मगरदास — · मगर आज ये साहब क्यो आये ? कही शारदा की मा ने तो कोई गडबड़ी नही कर दी ?

[साहब का रामू के साथ प्रवेश]

मगरदास — आइये दीनानाथ, वेलकम, गुडलक ।

साहब — सेठ मगरदास, हमको पता चला हैं कि चन्द्रशेखर आजाद तुम्हारे घर मे छिपा है । हमारी पुलिस ने उसे तुम्हारे घर मे आते देखा है ।

मगरदास ये आप क्या कह्ने लगे विश्वनाथ ? चन्द्रशेखर आजाद मेरे घर मे ? मेरे घर मे चोर, लुटेरो और डाकुओ का क्या काम जगन्नाथ ? आइ एम योर मोस्ट ओविडियेट सरवेंट स्टैंडिग आन वन लेग प्रेइग फार हेल्थ वेल्थ एण्ड प्रोस्पेरिटी।

साहब · हम तुम्हारे घर की तलाशी लेगा।

मगरदास · आज आप कैसी बाते कर रहे है दीना-नाथ ?अगर चन्द्रशेर आजाद मेरे घर मे पैर भी रख दे तो मैं उसका अपने ही हाथो से बध कर दूँगा। क्यो रामू ?

रामू जी सरकार

साहब · हम जानता है कि तुम बड़ा ही खैरख्वाह आदमी है मगर—

मगरदास · अब इस अगर—मगर को मगरदास पर ही छोड़ कर यह बतलाइये कि सरकार को कितना चन्दा चाहिए

साहब · तुम बहुत अच्छा आदमी है सेठ मगर दास : मगर देखो, अगर कभी चन्द्रशेखर आजाद तूम्हारे घर आ जाय तो उसको फौरन पकड़ कर पुलिस को इत्तिला देना होगा।

मगरदास अजी साहब, चन्द्रशेखर आजाद की क्या मजाल कि वह सेठ मगरदास के घर मे पैर भी रख सके। एक ही चांटे मे जहन्नम रसीद कर सकता हूँ सरकार। मै उसके हाथ पैर तोड़ कर रख दूँगा—उसकी नाक मे घूँसा मार दूगा—उसकी पूछ उखाड दूँगा—उसकी · ······ ··· क्यो रामू ?

रामू : जी सरकार

साहब : अच्छा हम चलता है। वाई-वाई।

[साहब जाते है]

सेठ मगरदास धत्त रे दीनानाथ की। साहब की अकल चरने चली गई है। मेरे घर मे चन्द्रशेखर आकर कही जिन्दा बच सकता है ? और फिर सुना है कि चन्द्रशेखर आजाद को पकड़वाने वाले को दस हजार रुपया इनाम मिलेगा। क्यों रामू, अगर आजाद कही पकड़े मिल जाय तो फिर बस यह दस हजार की रकम भी सेठ मगरदास की समझ लेना।

रामू : जी सरकार

मगरदास : अगर वह कही भूल से भी मेरे घर आ

जाय तो फिर बस पौ बारह है। पूरे दस हजार। भेज, भेज प्रभो इस चन्दशेखर आजाद को मेरे घर भेज

[तिजौरी खोलकर फिर नोट गिनता है। रामू धीरे से पिस्तौल निकालकर तानता है]

मगरदास आठ हजार पाँच सौ-अरे यह क्या रामू ? हाय हाय तू यह क्या मजाक कर रहा है।

रामू : सेठ जी, तिजोरी का यह सारा रूपया मेरे हवाले कीजिए नहीं तो—

[पिस्तौल सेठ पर तानता है]

मगरदास : अरे आज तुझे क्या हो गया है रामू ? अरे भाई इसे तो सामने से हटा—क्या करता है—क्या करता है ?

रामू : जल्दी से तिजोरी का रुपया मेरे हवाले कीजिए। जिस जनता का रक्त चूस कर आपने यह धन इकट्ठा किया है अब उसी जनता के पास यह धन लौट जायगा चलिए, जल्दी बढ़ाइए।

मगरदास : अरे सुन तो रामू—अरे रामू

रामू : रामू नहीं चन्द्रशेखर आजाद

[नकली मूछे उतार देता है]

मगरदास — आजाद ! चन्द्रशेखर आजाद ? हाय हाय——

[आजाद के पैरो पर लेट जाता है]

मगरदास — क्षमा करो प्रभो। आइ एम योर मोस्ट—

आजाद — उठिए सेठ जी। जल्दी से रुपया मेरे हवाले कीजिए।

मगरदास — चन्द्रशेखर आजाद, चन्द्रशेखर आजाद —देखो भाई रामू—नही चन्द्रशेखर आजाद—देखो भाई कहा सुना सब माफ करना—

आजाद — रुपया निकालो

मगरदास — हाय हाय जरा इसे तो दूर कर ले। अगर कही धोखे से भी छूट गयी तो शारदा की मा मेरे मरने से पहले ही बिधवा हो जायगी।

आजाद — तुम इसकी चिन्ता न करो। शारदा की माँ जैसी देश-भक्ता और सती साध्वी को विधवा न बनाने की वजह से ही तुम्हे आज छोड़ देता हूं।

मगरदास : अररररर—जरा इसे तो दूर कर ले भाई—

आजाद पीछे हटिये सेठ जी——अब वही खड़े रहिए—अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया तो.........

[आजाद नोट निकालते है]

मगरदास बन्दे भैया आजाद। आइ एम योर.........



तृतीय अंक　　　　　　　　पंचम दृश्य

(फासी की कोठरी)

(सरदार भगतसिंह　राजगुरू : सुखदेव)

सरदार भगतसिंह

(गाना)

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है
एक मुद्दत से हैं तेरी कैद में सैयाद हम
और आजादी की ख्वाहिश कैद अपने दिल में है
आज मकतल में वो कातिल कह रहा है बार बार
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है

राजगुरु　　: यही शहादत की तमन्ना आज जितनी भड़क रही है वैसी शायद कभी न भड़की थी। मैं भी गाना चाहता हूँ, लेकिन अफसोस गाना जानता ही नही

(भगतसिंह ठहाका लगाता है)

भगतसिंह　　मै तो देश की आजादी नजदीक ही आई समझ रहा हूँ राजगुरु।

अंग्रेजी सलतनत के पैर लडखडाने लगे हैं। मगर अफसोस

दुनियां के जो मजे हैं हर्गिज ये कम न होंगे
चलते रहेंगे यों ही अफसोस हम न होंगे

काश मे आजाद हिन्दुस्तान के दर्शन कर पाता–

राजगुरू आज तुम कैसी बाते कर रहे हो सरदार हमारे खून से सीची हुई आजादी, हमारे प्राणों के बलिदान पर बनी हुई आजादी —ओह यह याद करके मै गद्गद् हो जाता हूँ भगतसिह। हमको स्वतत्रता दिवस के जुलूसो मे नही, इतिहास मे स्थान चाहिए हम इतिहास बना रहे है, हम इतिहास बनाने जा रहे है। मै देश के लिए जिन्दा रहने में नही देश के लिए मरने में फक्र समझता हूँ।

भगतसिह साबाश राजगुरू। लेकिन आखिर वह दिन कब आयेगा जब हम भारत माता के पुनीत कदमों मे अपना सिर चढ़ा रहे होगे—मुझसे अब रुका नही जाता राजगुरू—मुझसे अब रुका नही जाता–

राजगुरू हमारी मौत हमारी जिन्दगी से कही ज्यादा शानदार होगी भगतसिह

(जमादार, पुलिस, जेलर आदि का प्रवेश)

भगतसिह खुशी, प्रसन्नता, ओह हमारी मुराद पूरी होने का शायद दिन आ ही गया राज-गुरू–सुखदेव—मुबारक—मुबारक

जेलर कैदियो तैयार हो जाओ। अब वक्त नही है। आज ही सारा काम पूरा करना होगा

राजगुरू : हम आप से पहले तैयार है जेलर साहब। चलिए।

(तीनो चलते है। भगतसिह गुनगुनाता है)

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है
आज मकतल में वो कातिल कह रहा है बार बार
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है

जेलर आप लोग वीर है। अफसोस हम लोग आप की कुछ सेवा नही कर सकते ।

भगतसिह मायूस न हो मेरे दोस्त । सबसे बड़ी सेवा तुम्हारी यही है कि तुम हम लोगों से हमदर्दी रखते हो। तुम बढिया इन्सान हो।

जेलर अफसोस, आप लोगों की लाश भी आप-के रिस्तेदारों को देने की मनाही कर दी गई है।

(भगतसिंह ठहाके लगाता है)

भगतसिंह सरकार का यह ख्याल एक मुबारक ख्याल है। हम तो अपना सब कुछ माता की भेंट चढा चुके जेलर साहब । तन, मन, धन, सभी कुछ।

हम मुबारक है कि माता की नजर चढ़ते हैं
तुम मुबारक हो जो यह दिन हमें नसीब हुआ
हम मे आपस में न कीना है न बदमगजी है
न रकाबत है न हम में कोई रकीब हुआ

राजगुरू हम तो सरकार के लिए यहा कह सकते है कि 'हम को दुआये दो तुम्हें कातिल बना दिया।'

जेलर अब चलिए देर हो रही है

सुखदेव : चल रहे है जेलर साहब । अब हमारे लिए जल्दी और देर क्या ? इस मस्ती के आलम में ज़बान से जो कुछ भी निकल जायगा वतन के लिए वही यादगार बन कर रह जायगा।

भगतसिंह : हा तो फिर

सुखदेव : हॉ वही अपना पेटेन्ट राग राजगुरू, बस आखिरी बार

(तीनो गाते है)

मेरा रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे बसंती चोला
नानाराव धुंधपंत ने एक चिनगारी सुलगाई
झाँसी की रानी ने भी एक लपक ध्वजा फहराई
वीर तांतिया टोपे चमका नया मोर्चा खोला
वही रंग के बसन्ती चोला मेरा रंग दे बसन्ती चोला
इसी रंग मे बिस्मिल रोशन ने थे सीस चढ़ाये
वीर हजारों बलिवेदी पर कफन लपेटे आये
इसी रंग में भगतसिंह ने बम का फेंका गोला
मेरा रंग दे बसंती चोला

[चले जाते है]
[सीन ट्रान्सफर]
[फासी घर मे तीनो गाते हुये पहुँचते है]
[गोरा मजिस्ट्रेट आता है]

गोरा मजिस्ट्रेट : गाना बन्द करो

[तीनो बन्देमातरम् का गाना शुरू करना चाहते है गोरा मजिस्ट्रेट रोकता है]

भगतसिंह गोरी हुकूमत के काले नुमाइन्दे, तू आज हम लोगो की जुबान नही बन्द कर सकता। मेरी ही क्या वह जमाना नजदीक है जब मुल्क में किसी भी इन्सान के मुंह पर तुम ताला न लगा सकोगे। इस मुल्क से एक दिन गोरी हुकूमत का खात्मा होना ही है । हम एक बार

बन्देमातरम् का गीत गाकर ही तख्ते पर चढ सकते है। दुनियां की कोई भी ताकत आज हमको नही रोक सकती।

राजगुरू बन्देमातरम्

गोरा मजिस्ट्रेट नही, नही, हम गाने की इजाजत नही दे सकता। फांसी—

भगतसिंह मुझे अफसोस है साहब कि अब मैं आपका यह हुक्म नही मान सकता।

[तीनो बन्देमातरम् गाते है]

छीन सकती हैं नही सरकार बन्देमातरम्
हम फकीरों के गले का हार बन्देमातरम्
बन्देमातरम्
सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम
शस्य श्यामलाम मातरम्
बन्देमातरम्
शुभ्र ज्योत्स्ना: पुलकित यामनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभनीम्
सुहासनीम् सुमधुर भाषणीम्
सुखदाम् बरदाम् मातरम्
बन्देमातरम्
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्विंत्रिंश कोटि भुजैः धृत करबाले
के बोले मां तुमि अबले
बहुबल धारणीम् नमामि तारणीम्
रिपुदल वारणीम् मातरम्
बन्देमातरम्

भगतसिह — चलो, अब हम मरने को तैयार है। माता के चरणो पर अपना शीश चढाने के लिए तैयार है। चलिए।

[तीनो फासी के तख्ते पर चढ जाते हैं]

तीनों — इकिलाब जिन्दाबाद, बन्देमातरम्

[झूल जाते है]

जेलर — इन कैदियो की लाशें ?

गोरा मजिस्ट्रेट — इन बदमाशो की लाशें यही फूकी जायगी राख रावी की लहरों मे बहा दी जायगी।

[तीनो लाशें मिट्टी का तेल डाल कर वही फूक देने का दृश्य]



तृतीय अंक   षष्ठम् दृश्य

(कानपुर का बेलेरियो होटल)

[डांस]

आफिसर : इतनी जिल्लत उठाने पर भी आजाद आज तक हाथ नही आया । सुना है बहुत जल्द सरकार और कांग्रेस मे सुलह होने वाली है । हिन्दुस्तान की तकदीर खुलने वाली है। अगर आजाद को इससे पहिले न पकड लिया गया तो .

[एक खुफिया के आदमी का प्रवेश]

आफिसर क्या हुआ मुस्तफा ? कोई अच्छी खबर ?

मुस्तफा अब पौ बारह हैं सरकार। बडी मुश्किल से नेता जी दस हजार रुपये पर आजाद को पकडबाने के लिए राजी हुए है। अब देर करने की जरूरत नही है। उनका कहना है कि आजाद दो तीन दिन के अन्दर ही इलाहाबाद पहुंचने वाला है। हमको जल्द ही —

आफिसर मगर —

नेताजी बन्दे डिप्टी साहब । आप कुशल से तो है ?

आफिसर अजी सब आपकी मेहरबानी है। अरे कोई है, पण्डित जी के लिये चाय नाश्ता लाओ ।

पण्डित जी : आप क्यो कष्ट कर रहे है डिप्टी साहब । मै तो—

आफिसर : अरे साहब, आप जैसे नेता मेरे घर पर पधारे और हम—

नेताजी : मै तो चाय का सेवन नही करता । गाँधी जी भी चाय नही पीते । आप जानते है मै तो गान्धीजी के सिद्धान्तो पर चलने वाला आदमी हूँ ।

आफिमर · अरे माहब मै तो खुद गान्धीजी का भक्त हूँ । गान्धीजी ही इस मुल्क को आजाद करेगे ।

नेताजी मै तो हिसात्मक आन्दोलन को सिर्फ डाकुओ और लुटेरो की सस्था मानता हूं । इससे तो हमारी आजादी की लड़ाई को नुकसान ही पहुचता है ।

आफिसर मैं तो साहब आपके जजबातो की तारीफ करता हू । आप जैसे दस-पॉच आदमी भी

अगर कांग्रेस मे हों तो स्वराज्य मिलने मे देर न लगे ।

(नेता जी प्रसन्न हो जाते है)

आफ़िसर फिर अब आज्ञा ?

नेताजी हमको सुबह ही इलाहाबाद के लिए रवाना हो जाना पड़ेगा । आपभी सवेरे ही रवाना हो जायँगे । मैं आपको कहा—मै कहा मिलू आपसे ?

आफिसर अगर आपको कोई तकलीफ न हो तो मै पुलिस क्लब में आपको हर वक्त मिलूगा । वहाँ से हिलूगा भी नही ।

नेताजी : अच्छा तो फिर इजाजत दीजिये । मुझे आज ही प्रयाग को जाना पड़ेगा । मगर देखिए—

आफिसर . हाँ हाँ कहिए ।

नेताजी . देखिए एक तो मेरा इनाम और दूसरे मेरी प्रतिष्ठा ।

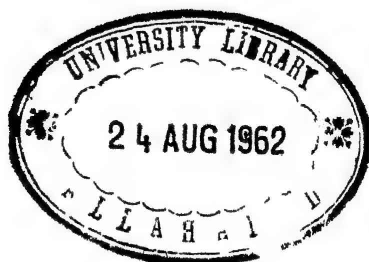
आफिसर इसकी आप जरा भी चिन्ता न करे पण्डित जी । मैं कहता हू कि इनाम ही क्या आप जो भी मागेंगे सरकार वह

आपको देगी। आप खुश हो जायेंगे। आपकी जिन्दगी भी सुधर जायगी और नेता भी बने रहेंगे। आपका नेता ही बने रहना सरकार के लिए हमेशा मुफीद रहेगा।

नेताजी — अच्छा तो फिर मैं जाता हूँ।

आफिसर — । वन्देमातरम् ।





तृतीय अंक सप्तम् दृश्य

(इलाहाबाद का अल्फ्रेड पार्क)

(आजाद नेता जी के साथ बैठे हुये

नेताजी : गान्धी जी की लार्ड इर्विन के साथ जो बातचीत चल रही है उससे समझौता नजदीक मालूम पड रहा है भइया। आपकी क्या राय है

आजाद : देश की दशा देखते हुए अब समझौता ही हमारे हक मे अच्छा रहेगा। अब तो आन्दोलन मे काफी शिथिलता भी आ चली है।

नेताजी : लेकिन आपका प्रोग्राम

आजाद : मै यहा से दक्षिण जा रहा हू अब। अब अपने कार्य का केन्द्र दक्षिण भारत को ही बनाना पड़ेगा। अपने आन्दोलन का फिर से नये रूप से सचालन करना पड़ेगा।

नेताजी . मैं आपके साथ ही चलूँगा भइया ।

आजाद : तुम मेरे सबसे विश्वस्त सैनिक हो पडित । तुमको तो साथ ही रखना है । कल शाम की गाडी से हम लोग अहमदाबाद के लिए रवाना होजायेगे । तुम तैयार रहना ।

नेताजी मै तो हमेशा आपके लिए जान देने को तैयार रहता हूँ भइया । मेरे होते—

आजाद : मुझे तुम पर ऐसा ही विश्वास है ।

[थोडी देर दोनो चुप रहते हैं]

नेताजी आप यही ठहरे भइया । मै आध घण्टे मे तैयार होकर आता हूँ ।

आजाद . मगर देर मत लगा देना पण्डित ।

नेताजी : आध घण्टे के अन्दर आ जाऊँगा भइया । आप मेरी प्रतीक्षा अवश्य ही करें । चले न जायँ ।

आजाद : अच्छा ।

[नेता जी चले जाते है]

आजाद · सच पूछो तो अब मैं भी कुछ थक गया हूँ । सोचता हूँ कि थोडे समय के लिए कही विश्राम कर लूं मगर——विश्राम

क्या ? साथी सब अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुके। अब मै भी उसी मार्ग पर जाने का न जाने क्यो बड़ा ही इच्छुक हो रहा हूँ। पार्टी भङ्ग हो गई है। अब मै ही नेता हूँ और मै ही पार्टी। मगर मै हार मानने वाला आदमी नही हूँ। देश के लिये कोई बडा भारी काम करके ही मरना पडेगा।

[थोडी देर चुप रहते है]

मगर काफी देर हो चली। अभी पण्डित नही आया। बेचारा सीधा सादा और मेरा भक्त आदमी है। मुझ पर उसका अटल विश्वास है, मगर अब तो काफी देर हो गई।

[उठकर टहलने लगता है]

[सहसा सामने से कुछ सिपाही दिखलाई पडते है]

पुलिस ? आज इतनी पुलिस क्यो दिखलाई पड़ रही है ! मेरे आने की बात तो किसी को मालूम नही हो सकती। मैं इलाहाबाद मे हूँ यह मेरे और पण्डित के सिवा और कोई जानता भी नही फिर——

[चारो ओर पुलिस दिखलाई पडने लगती हैं]

ओह, सँभल जा आजाद । यह पुलिस अवश्य ही तेरे ही लिये यहा आई है । मगर——हा हा हा । आजाद को पकडना कोई साधारण काम नही है । आओ—— आज तुम लोगो को भी मौत के घाट उतारना होगा ।

[आजाद सभलकर खडा होता है और रिवाल्वर सभाल लेता है]

[पुलिस की भीड के साथ नाटबावर का प्रवेश]

आजाद — दूर ही रहना कुत्तो । एक कदम आगे बढाते ही तुमको कुत्तो की मौत मरना पडेगा ।

नाटबावर — बस अब हथियार धर दो आजाद । आज तुम जिन्दा यहाँ से निकलकर न भाग सकोगे । रख दो हथियार ।

[आजाद ठहाका लगाता है]

आजाद — आज आप भी अपनी ताकत आजमा लें नाटबावर साहब । आप आजाद को जिन्दा न पकड सकोगे होशियार

[रिवाल्वर चलाता है । पुलिस भी गोलिया चलाती है । घण्टे भर तक दोनो ओर से गोलिया चलती है । अन्त मे आजाद 'बन्दे-मातरम्' कह कर गिर जाता है ।

[नाटबावर और पुलिस बहुत डरती हुई उसके नजदीक आती है पास जाकर तीन चार फायर और लाश पर करती है]

[प्लाट फटता है]

[पीछे वही स्वतन्त्रता दिवस की सभा]

नेताजी — यही है उस वीर चन्द्रशेखर आजाद की कहानी। आप लोग एक बार श्रद्धा के साथ बोले–चन्द्रशेखर आजाद।

सभी — जिन्दाबाद।

[प्लाट का फिर फटना]

[आजाद के स्मारक के दर्शन]

नेताजी — शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले
वतनपर मरने वालोंका यही बाकी निशां होगा

[सबका गाना]

[गाना]

आज हमारा पुण्य दिवस है घडियाँ हैं अभिमान की
देश देश मे उडी पताका हिन्दी, हिदुस्तान की
इसी दिवस के लिए जवानों ने कुरबान जवानी की
इसी दिवस के लिए लड़ी वह झांसी वाली रानी थी
नाना राव तांतिया टोपे की भी अकथ कहानी थी
श्रद्धांजलियाँ इन्हे भेट है हम सबके सम्मान की
देश देश मे उडी पताका हिन्दी, हिन्दुस्तान की
सुदियो से धरती पर कोई सत न ऐसा आया था

सत्य अहिंसा का जिसने इस जग को पाठ पढाया था
इनकिलाब कर दिया देश मे घर घर अलख जगाया था
याद रहेगी अमर कहानी बापू के बलिदान की
देश देश मे उड़ी पताका हिन्दी, हिन्दुस्थान की
माँ की बन्धन-पीडा मे जो अपनेपन को भूल गया
याद करो उस भगतसिह की जो फासी पर झूल गया
मोती और जवाहर की उस त्याग मूर्ति को याद करो
याद करो लाला जी को उस अमर कीर्ति को याद करो
सदियाँ गायेगी गाथा इन सबके गौरव-गान की
देश देश मे उडी पताका हिन्दी, हिन्दुस्तान की

[यवनिका पतन]